Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 287 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, बुधवार 07 मई 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अहिंसा के लिए जिसका समर्पण है उसे शर्त आदि की बात नहीं करना चाहिये।

One who is dedicated to nonviolence should not put any condition or wager.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

केदारनाथ यात्रा में घोड़े और खच्चरों के संचालन पर रोक

रुद्रप्रयाग (आरएनएस)। केदारनाथ यात्रा मार्ग पर चल रहे घोड़े-खच्चरों में एक्वाइन इन्फ्लूएंजा वायरस के लक्षण सामने आने के बाद पशुपालन विभाग ने बड़ा कदम उठाया है। सचिव पशुपालन डॉ. पुरुषोत्तम ने अधिकारियों के साथ बैठक कर अगले 24 घंटे तक सभी घोड़े-खच्चरों के संचालन पर पूर्ण रोक लगाने के आदेश दिए हैं। रविवार को 8 और सोमवार को 6 घोड़े-खच्चरों की अचानक मौत के बाद यह फैसला लिया गया है। इन मौतों की असली वजह जानने के लिए भारत सरकार से विशेषज्ञों की टीम रुद्रप्रयाग पहुंच रही है। वहीं, संक्रमित या संदिग्ध घोड़ों को क्वारंटाइन किया जा रहा है और राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार को जांच के लिए सैंपल भेजे गए हैं।

दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता ने प्रदूषण की रोकथाम के लिए की बैठक

नई दिल्ली (आरएनएस)। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए राज्य की भाजपा सरकार लगातार प्रयास कर रही है। इस सिलसिले में मंगलवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने एक बैठक की, जिसमें दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने बताया कि बैठक में वायु प्रदूषण को कम करने के तरीकों पर चर्चा की गई। वाहनों से होने वाले प्रदूषण, धूल प्रदूषण या अन्य प्रकार के प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार काम कर रही है।

देशभर के 244 जिलों में आज इमरजेंसी मॉक ड्रिल

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल मिले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ तनाव बढ़ता जा रहा है. पाकिस्तान की ओर से भी लगातार जंग की धमकी दी जा रही है. इस बीच मंगलवार को प्रधानमंत्री कार्यालय दिल्ली में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) अजित डोभाल ने पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात की. डोभाल आज अकेले ही पीएम से मुलाकात करने आए थे. दोनों के बीच करीब 40 मिनट तक बातचीत हुई.

इससे पहले रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने कल सोमवार को पीएम मोदी से मुलाकात की थी. रक्षा सचिव से पहले वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह और नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी भी पीएम मोदी से मुलाकात कर चुके हैं.

गृह मंत्रालय के निर्देश पर, हमले के खतरे को देखते हुए कल (7 मई) को देशभर में 244 जगहों पर इमरजेंसी मॉक ड्रिल आयोजित की जाएगी, जिसमें आपातकालीन तैयारियों को परखा जाएगा. जम्मू कश्मीर में 20 जगहों समेत सीमा से जुड़े इलाकों पर खास फोकस रहेगा, और मॉक ड्रिल पर केंद्रीय गृह सचिव राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के साथ बैठक की. सूत्रों ने बताया कि इस तरह का देशव्यापी नागरिक सुरक्षा अभ्यास आखिरी बार साल 1971 में किया गया था, जिस साल भारत और पाकिस्तान के बीच दो मोर्चों पर युद्ध हुआ था। उधर पाकिस्तान को सबक सिखाने का मिशन शुरू हो गया है, सीमा पर मुस्तैदी बढ़ाई गई है और पानी की सप्लाई रोके जाने से पाकिस्तान में जल संकट पैदा हो गया है.

मॉक ड्रिल से पहले केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन ने भी मंगलवार को अहम बैठक बुलाई. बैठक में नागरिक सुरक्षा प्रणाली को मजबूत करने की तैयारियों की समीक्षा हुई. इसमें हवाई हमले की चेतावनी देने वाले सायरन बजाने संबंधित मॉक ड्रिल आयोजित करना, लोगों को बाहर से हमले की सूरत में खुद को बचाने के लिए प्रशिक्षित करना और बंकरों की सफाई करने पर चर्चा की गई. गृह सचिव के साथ बैठक में कई राज्यों के मुख्य सचिव भी शामिल हुए. गृह मंत्रालय में बुलाई गई बैठक में एनडीआरएफ के डीजी, होम गार्ड के डीजी, डीजी फायर भी पहुंचे. इनके अलावा रेलवे और वायु सुरक्षा से जुड़े शीर्ष अधिकारी भी बैठक में मौजूद रहे.

कई शहरों में मॉक ड्रिल की हो रही तैयारी

बढ़ते तनाव के बीच भारत ने कल सोमवार को आधुनिक जंगी जहाजों और पनडुब्बियों के खिलाफ नौसेना की क्षमताओं को बढ़ाने को लेकर पानी के नीचे तैयार की गई नौसैनिक सुरंग का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है. राजधानी दिल्ली, लखनऊ, श्रीनगर, भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और जबलपुर समेत देश के कई शहरों मॉक ड्रिल को लेकर तैयारी शुरू कर दी गई है. गृह मंत्रालय में आज की बैठक में इस बात की समीक्षा की गई कि लोगों को कैसी ट्रेनिंग दी जाए. साथ में एयर रेड साइरन को फॉलो कैसे करें और ब्लैक आउट सिचुएशन क्या करें.

भारत के एक्शन पर पड़ोस में भी हलचल

भारत की ओर से संभावित बड़े कदम से पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में भी खासी हलचल देखी जा रही है. पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ पहले से भी चिंता जता रहे हैं कि भारत उनके देश पर हमला कर सकता है. रक्षा मंत्री ने आगाह करते हुए कहा कि भारत कश्मीर में नियंत्रण रेखा (स्पष्ट) के पास किसी भी समय सैन्य हमला कर सकता है. पाकिस्तान के वरिष्ठ राजनयिक और उच्चायुक्त रहे अब्दुल बासित ने आज दावा करते हुए कहा है कि भारत अगले वीकंड पर हमला कर सकता है. उनका कहना है कि रूस में विजय उत्सव के बाद भारत संभवतः 10-11 मई को पाकिस्तान के खिलाफ अपनी सीमित कार्रवाई कर सकता है.

सुशासन तिहार 2025 मुख्यमंत्री अचानक पहुंचे सहसपुर, लिया ग्रामीणों से सीधा फीडबैक

मैं आप लोगों की दुख-तकलीफ जानने आया हूँ : साय

विद्युत सब स्टेशन, हायर सेकंडरी स्कूल भवन और प्राचीन मंदिर के सौंदर्यीकरण की घोषणा

गांव में सहसा गूंजी हेलीकॉप्टर की आवाज तो ग्रामीण निकले घरों से, अपने मुखिया से मिलने उमड़ी भीड़

मुख्यमंत्री साय ने बरगद की छांव में खाट पर बैठ जाना ग्रामीणों का हाल-चाल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सुशासन तिहार के तीसरे चरण के दूसरे दिन हेलीकॉप्टर से अचानक बेमेतरा जिले के सहसपुर पहुंचे। उन्होंने ग्रामीणों से योजनाओं का सीधा फीडबैक लिया। मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों से कहा कि मैं आप लोगों के बीच आपकी दुख-तकलीफ जानने आया हूँ। ग्राम- सहसपुर में मुख्यमंत्री के आने की कोई पूर्वयोजना नहीं थी। ऐसे में जब गांव में सहसा हेलीकॉप्टर की आवाज गूंजी तो अचंभित ग्रामीण अपने घरों से निकले। अपने मुखिया से मिलने लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। ग्रामीणों ने खुशी में कहा- राम-राम जी गा मुख्यमंत्री जी ! और सदाबहार फूल की माला और चंदन-आरती के साथ उनका स्वागत किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने ग्राम- सहसपुर में ग्रामीणों से पुराने बरगद की छांव में खाट पर बैठ संवाद किया। उन्होंने लोगों से शासन की योजनाओं प्रधानमंत्री आवास योजना, महतारी वंदन योजना, नल जल योजना, धान खरीदी, स्कूल में बच्चों की शिक्षा सहित अन्य योजनाओं के क्रियान्वयन की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार को अभी डेढ़ साल हुए हैं इस अवधि में हमने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की कई गारंटी को पूरा किया है। सरकार बनने के बाद पहली कैबिनेट में हमने 18 लाख आवास को स्वीकृति दी।किसानों को 2 साल का बकाया बोनस दिया। 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी भी की जा रही है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सुशासन तिहार का ये तीसरा चरण है। शुरुआती चरणों में लोगों से उनकी समस्याओं के सम्बंधित आवेदन लिए गए। इन आवेदनों का अधिकारियों द्वारा लगातार निराकरण किया जा रहा है। अब मैं स्वयं आप सभी के बीच सरकार के अधिकारियों के साथ पहुंचा हूँ ताकि आप सीधे मुझ तक अपनी बात पहुंचा सकें।

पूनम साहू ने कहा- महतारी वंदन से मिली बड़ी मदद : मुख्यमंत्री श्री साय के चौपाल में महतारी वंदन से मिल रही सहायता पर श्रीमती पूनम साहू ने अपनी बात रखी। पूनम ने कहा कि महतारी वंदन योजना से मिली राशि से परिवार और बच्चों की जरूरतों को पूरी करने में बड़ी मदद मिलती है। हर माह महतारी वंदन योजना की राशि नियमित रूप से मिलती है।

सहसपुर ग्राम पंचायत में मुख्यमंत्री ने की घोषणाएं- मुख्यमंत्री ने सहसपुर में ग्रामीणों से बरगद के नीचे खाट पर बैठकर संवाद किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों की मांग पर गांव के हायर सेकेंडरी स्कूल के लिए नए भवन को स्वीकृति दी। साथ ही उन्होंने 13 वीं-14 वीं शताब्दी में फणी नागवंशी राजाओं द्वारा निर्मित शिव मंदिर व हनुमान मंदिर परिसर के सौंदर्यीकरण की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करेंगे। महाशिवरात्रि के मेले में मैं खुद आऊंगा। मुख्यमंत्री श्री साय ने सहसपुर में 33 केव्ही विद्युत सब स्टेशन की भी घोषणा की।

इस अवसर पर विधायक श्री ईश्वर साहू, मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध कुमार सिंह और मुख्यमंत्री के सचिव श्री पी. दयानन्द उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री पहुंचे किसान रोहित साहू के केला और पपीता के खेत

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज सुशासन तिहार के तहत औचक निरीक्षण पर बेमेतरा जिले के ग्राम सहसपुर आये। इस दौरान वे सहसपुर ग्राम के उत्कृष्ट किसान रोहित साहू के केला और पपीता के हरियाले खेत भी पहुंचे। मुख्यमंत्री को श्री साहू ने बताया कि वे पिछले 9 साल से केला और पपीता की खेती कर रहे हैं, जिससे वे लाखों का मुनाफा कमा रहे हैं और 15-20 लोगों को अपने खेत में रोजगार भी दे रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कृषक श्री साहू की सराहना करते हुए कहा कि उनकी खेती सभी किसानों के लिए प्रेरणादायी है। मुख्यमंत्री श्री साय को कृषक श्री साहू ने अपने खेत के ताजे केला और पपीता भेंट किये। मुख्यमंत्री को उन्होंने बताया कि वे 5 एकड़ में केला और साढ़े तीन एकड़ में पपीता की खेती कर रहे हैं। जिससे वे केले से प्रति एकड़ डेढ़ लाख रुपये व पपीता से 1 लाख रुपये तक का मुनाफा कमा रहे हैं।

मल्लिकार्जुन खड़गे ने पीएम मोदी को लिखा पत्र, जाति जनगणना पर दिए कुछ सुझाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने मंगलवार को जाति जनगणना को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक पत्र लिखा है। उन्होंने अपने पत्र के जरिए पीएम मोदी को कुछ सुझाव भी दिए हैं। मल्लिकार्जुन खडगे ने अपने एक्स अकाउंट पर पत्र शेयर करते हुए लिखा, जाति जनगणना पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मेरा पत्र। मैंने 16 अप्रैल, 2023 को आपको पत्र लिखकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जाति जनगणना की मांग को आगे बढ़ाया था। अफसोस की बात है कि मुझे इस पत्र का कोई जवाब नहीं मिला। दुर्भाग्य से, आपकी पार्टी के नेताओं और आपने इस वैध मांग को उठाने के लिए कांग्रेस और उसके नेतृत्व पर हमला किया, जिसे आप आज स्वीकार करते हैं कि यह गहरे सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण के हित में है। आपने अब घोषणा की है कि अगली जनगणना (जो 2021 में होनी थी) में जाति को एक अलग श्रेणी के रूप में शामिल किया जाएगा, लेकिन इसके विवरण नहीं दिए। मेरे पास आपके विचार के लिए तीन सुझाव हैं।

उन्होंने आगे बताया, जनगणना प्रश्नावली का डिजाइन महत्वपूर्ण है। गृह मंत्रालय को तेलंगाना मॉडल से प्रेरणा लेनी चाहिए, प्रश्नावली को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया और पूछे गए सवालों के सेट दोनों के लिए। जाति जनगणना के परिणाम जो भी हों, यह स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण की मनमानी सीमा को संविधान संशोधन के माध्यम से हटाया जाना चाहिए। संविधान में अनुच्छेद 15(5) को 20 जनवरी, 2006 से लागू किया गया था। इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी और 29 जनवरी, 2014 को लंबी सुनवाई के बाद इसे बरकरार रखा गया। यह निजी शैक्षणिक संस्थानों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और ओबीसी के लिए आरक्षण का प्रावधान करता है। इसे लागू करना चाहिए।

सभी कलेक्टरों को संपत्तियों के रजिस्ट्री में किए गए 10 क्रांतियों का जिला स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन करने के निर्देश

रायपुर (विसं)। मुख्य सचिव अमिताभ जैन ने प्रदेश के सभी कलेक्टरों को संपत्तियों के रजिस्ट्री में किए गए 10 क्रांतियों का जिला स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि आम जनता के हित में किए गए क्रांतिकारी सुधारों की जानकारी लोगों को दी जाय।

मुख्य सचिव जैन ने कहा है कि पंजीयन विभाग की 10 जन उपयोगी पहलुओं का उद्देश्य संपत्ति पंजीयन प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी सरल, डिजिटल और नागरिक केंद्रित बनाना है। आधार आधारित प्रमाणीकरण ऑनलाइन भार मुक्त प्रमाण पत्र व्हाट्सएप सूचना सेवा, घर बैठे, रजिस्ट्री और स्वतः नामांतरण जैसी सुविधाओं के माध्यम से आम जनता को पंजीयन का लाभ अब कहीं अधिक सरलता से प्राप्त हो सकेगा। उन्होंने कलेक्टरों से कहा है कि इन सुधारों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जिला स्तर पर वर्कशॉप आयोजित कर सतत निगरानी की जाए तथा जन सामान्य को सेवाओं की जानकारी दी जाए। मुख्य सचिव ने कहा है कि कलेक्टरों की भागीदारी से यह पहल जमीनी स्तर पर सफल होंगी और छत्तीसगढ़ सुशासन की एक सशक्त मॉडल के रूप में अधिक सुदृढ़ होगा।

पाकिस्तान से बढ़ते तनाव के बीच भारत को रूस से मिलेगा अत्याधुनिक स्टील्थ युद्धपोत 'तमाल', ब्रह्मोस से होगा लैस

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारत-रूस रक्षा सहयोग को एक नया आयाम मिलने जा रहा है। पाकिस्तान में सक्रिय आतंकी नेटवर्क के खिलाफ भारत की रणनीतिक तैयारियों के बीच, भारतीय नौसेना को जल्द ही दुनिया के सबसे एडवांस मल्टी-रोल स्टील्थ फ्रिगेट्स में से एक 'तमाल' मिलने वाला है। इस युद्धपोत का निर्माण रूस के यांतर शिपयार्ड में हुआ है और इसे 28 मई 2025 को भारत को सौंपे जाने की तैयारी है। 'तमाल' भारत-रूस के बीच 2016 में हुए चार तलवार-श्रेणी के फ्रिगेट्स निर्माण समझौते का हिस्सा है। इस डील के तहत दो जहाज रूस में और दो भारत में बनाए जा रहे हैं। रूस में बना पहला युद्धपोत INS Tushil पहले ही भारतीय नौसेना में शामिल हो चुका है।

क्या होंगी 'तमाल' की विशेषताएं- ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल से लैस, जो समुद्री लक्ष्य को सेकंडों में नष्ट कर सकती है। पनडुब्बी रोधी युद्धक क्षमता, टॉरपीडो और रॉकेट लॉन्चर से लैस। 30 नॉट की स्पीड (लगभग 55 किमी/घंटा) और 3000 किमी की ऑपरेशनल रेंज। मल्टी-रोल हेलीकॉप्टर की तैनाती की सुविधा, निगरानी और रेस्क्यू मिशनों के लिए उपयुक्त। स्टील्थ डिजाइन, जिससे यह दुश्मन की रडार पकड़ से बचता है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, भारतीय नौसेना के 200 से अधिक अधिकारियों और नौसैनिकों ने रूस में 'तमाल' को चलाने और ऑपरेट करने का विशेष प्रशिक्षण लिया है। इसके सभी परीक्षण रूस में भारतीय टीम की निगरानी में पूरे हो चुके हैं।

सुतियापाट नहर विस्तारीकरण कार्य को जल्द पूरा करने और सिंचाई एवं पेयजल आपूर्ति के लिए 78 करोड़ 45 लाख रुपए स्वीकृति की घोषणा

पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने जताया मुख्यमंत्री का आभार

रायपुर (विश्व परिवार)। आज कबीरधाम जिला के वनांचल क्षेत्र ग्राम दलदली में सुशासन तिहार के तहत आयोजित समाधान शिविर में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी ने जनता से संवाद कर उनकी समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा सुतियापाट नहर विस्तारीकरण परियोजना को जल्द पूरा करने और 26 गांव में सिंचाई योजना एवं 54 गांव में पेयजल आपूर्ति हेतु रामपुर (ठाठापुर)-दशरंगपुर-इंदौरी और मरका तक पाइप लाइन विस्तार हेतु 78 करोड़ 54 लाख रुपये की स्वीकृति देने की घोषणा की। इसके साथ ही छीरपानी जलाशय से 66 गांव में पेयजल आपूर्ति के लिए 1 करोड़ 23 लाख रुपए की स्वीकृति और दलदली में कन्हाई नदी द्वारा घरों तक जल आपूर्ति की घोषणा भी मंच से की गई जिससे किसानों और ग्रामवासियों में उत्साह दिखाई दिया और सभी ने मुख्यमंत्री जी का अभिवादन किया।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा जी एवं पंडरिया विधायक श्रीमती भावना बोहरा जी ने मुख्यमंत्री जी के आगमन पर हैलीपैड में उनका स्वागत किया और कार्यक्रम में शिरकत करते हुए जनता को संबोधित किया। इस दौरान मुख्यमंत्री जी द्वारा सुतियापाट नहर विस्तारीकरण एवं क्षेत्र के किसानों हेतु सिंचाई योजना और ग्रामवासियों के लिए पेयजल आपूर्ति हेतु पाइप लाइन विस्तारीकरण के लिए 78 करोड़ 54 लाख रुपये की स्वीकृति तथा छीरपानी जलाशय से 66 गांव में पेयजल आपूर्ति के लिए 1 करोड़ 23 लाख रुपए की स्वीकृति और दलदली में कन्हाई नदी द्वारा घरों तक जल आपूर्ति की घोषणा करने के लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी का आभार व्यक्त किया। भावना बोहरा ने कहा कि मुख्यमंत्री जी द्वारा किसानों के हित और जनता की सुविधा के हेतु लिए गए इस निर्णय से सैकड़ों गाँव को लाभ मिलेगा। सुतियापाट आहार विस्तारीकरण हेतु हमने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के दौरान कड़ा संघर्ष किया, हजारों की संख्या में ग्रामवासियों, किसानों के साथ हमने प्रदर्शन, पदयात्रा और ट्रैक्टर एवं बैलगाड़ी यात्रा निकालकर इस मांग को पूरा करने के लिए निरंतर संघर्ष किया, लेकिन प्रदेश में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के कुशल मार्गदर्शन व नेतृत्व में डबल इंजन भाजपा सरकार बनने के बाद इसकी स्वीकृति मिली और मार्च 2024 में इस कार्य का भूमिपूजन करने का अवसर मुझे मिला जो आजीवन मुझे स्मरणीय रहेगा। इस नहर के विस्तारीकरण से जहाँ 26 गाँव के 3250 हेक्टेयर भूमि में किसानों को सिंचाई हेतु पर्याप्त जल की पूर्ति होगी।

उन्होंने आगे कहा कि सतियापाट नहर विस्तारीकरण परियोजना को गति देने और उसे जल्द से जल्द पूरा करने के साथ ही माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा आज ग्राम दलदली में सुशासन तिहार के तहत आयोजित समाधान शिविर में 26 गांव में सिंचाई योजना एवं 54 गांव में पेयजल आपूर्ति हेतु रामपुर (ठाठापुर)-दशरंगपुर-इंदौरी और मरका तक पाइप लाइन विस्तार हेतु 78 करोड़ 54 लाख रुपये की स्वीकृति देने की घोषणा से क्षेत्र के हजारों किसानों और जनता को सिंचाई एवं पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

मुख्यमंत्री साय का आह्वान- शहरों में सुराज के लिए करें प्रतिबद्धता के साथ कार्य

'नगर सुराज संगम' के समापन सत्र में बोले मुख्यमंत्री- जनता का विश्वास, आपके अच्छे कार्यों का इनाम है

शहरों के विकास के रोडमैप और कार्ययोजना पर हुआ सार्थक संवाद : अरुण साव

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने नगरीय निकायों के नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों से शहरों में सुराज के लिए काम करने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि आपके शहर की जनता ने आप पर विश्वास कर शहर के विकास और जन सुविधाएं विकसित करने की जिम्मेदारी सौंपी है। आप लोग इस अवसर का सदुपयोग करें, निष्ठा और जवाबदेही के साथ अपने कर्तव्यों को निभाएं। अच्छा काम करने वालों को जनता लगातार अपना आशीर्वाद देकर आगे बढ़ने का मौका देती है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज शाम नगरीय निकायों के नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों के लिए आयोजित दो दिवसीय प्रबोधन कार्यक्रम-सह-कार्यशाला ''नगर सुराज संगम'' के समापन सत्र में ये बातें कहीं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों और नगरीय प्रशासन विभाग के मैदानी अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि शहरों को सुंदर, स्वच्छ और सुविधापूर्ण बनाने की महती जिम्मेदारी आप लोगों के कंधों पर है। इस कार्यशाला में आप लोगों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के साथ ही विभाग की कार्यप्रणाली, योजनाओं व अधिनियमों की जानकारी मिली है। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने भी स्वयं दो घंटे तक मार्गदर्शन दिया है। इस कार्यशाला से नगरीय प्रशासन एवं विकास से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर आपके ज्ञान में वृद्धि हुई होगी और यह आपको ज्यादा कुशलता से अपने कार्यों को अंजाम देने में मददगार होगा। श्री साय ने उम्मीद जताई कि इस नगर सुराज संगम से लौटकर हमारे जनप्रतिनिधि अपने-अपने शहरों में सुराज लाने के लिए सक्रियता से काम करेंगे।

उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव ने कार्यशाला के समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि हाल ही में संपन्न नगरीय निकायों के चुनाव में अनेक जनप्रतिनिधि पहली बार निर्वाचित होकर आए हैं। उनके लिए विभाग द्वारा दो दिनों के इस प्रबोधन कार्यक्रम-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया है। उन्होंने बताया कि कार्यशाला के पहले दिन राज्य के सभी नगर निगमों के कुल 228 प्रतिनिधि शामिल हुए जिनमें महापौर, सभापति, एमआईसी सदस्य, आयुक्त और वरिष्ठ अभियंता शामिल हैं। वहीं आज दूसरे दिन प्रदेशभर की नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों के 477 प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण दिया गया जिनमें नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों के अध्यक्ष, मुख्य नगर पालिका अधिकारी और अभियंता शामिल हैं। इस तरह कुल 705 जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से शहरों के विकास का रोडमैप साझा किया गया है। अगले पांच वर्षों की कार्ययोजना पर संवाद के साथ ही बुनियादी सुविधाओं से लेकर संसाधनों के सुप्रबंधन के उपायों पर विमर्श किया गया है।

नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के सचिव डॉ. बसवराजु एस. ने कार्यशाला के समापन सत्र में अपने स्वागत संबोधन में बताया कि नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधियों के साथ दो दिनों तक शहरों के विकास और नागरिकों को अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कराने पर विस्तार से चर्चा हुई है।

न्यायालय नायब तहसीलदार रायपुर, जिला रायपुर (छत्तीसगढ़)

// इश्तिहार //

क्रमांक /...../ ब-121/ वर्ष 2024-25

रायपुर, दिनांक 02/05/2025

ग्राम अटारी प0ह0नं0 34, तहसील रायपुर, जिला रायपुर (छ.ग.)

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, आवेदक **फलेन्द्र चन्द्राकर पिता खुमान सिंग निवासी- ग्राम कुकदा तहसील पाटन जिला दुर्ग (छ0ग0)** द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है कि **ग्राम अटारी प0ह0नं0 34 रा.नि.मं. रायपुर-1 तहसील व जिला रायपुर स्थित भूमि खसरा नंबर** 192/17, 192/18, 192/20 **रकबा क्रमशः** 0.055, 0.050, 0.132हे. **कुल रकबा** 0.237हे. भूमि जो कि राजस्व अभिलेख में रोड हेतु त्रुटिवश दर्ज है जबकि स्थल पर रोड **खसरा नंबर** 192/19 **रकबा** 0. 055हे., **खसरा नंबर 174/1 का भाग रकबा 0.202हे. खसरा नंबर 189/7 का भाग रकबा 0.412 है.** पर निर्मित है। उक्त रोड मेरे **पुरखा स्व. अयोध्या प्रसाद चन्द्राकर** के द्वारा संयुक्त हिन्दू परिवार के संयुक्त रूप से उपयोग-उपभोग करने बाबत् छोड़ा गया था। **स्व. अयोध्या प्रसाद चन्द्राकर** के संयुक्त हिन्दू परिवार की पारिवारिक व्यवस्था अनुसार मुझे हिस्से प्राप्त भूमि जिस पर मेरा आधिपत्य है जो कि आज दिनांक तक मेरे नाम पर राजस्व अभिलेखों में दर्ज नहीं हो पाया है। उक्त आवेदित भूमि पर मै कृषि कार्य भी करता हूं त्रुटिवश राजस्व अभिलेख में रोड हेतु दर्ज है जबकि पूर्व में स्व. अयोध्या प्रसाद चन्द्राकर के पुत्र रामआश्रय के उत्तराधिकारियों के नाम पर राजस्व अभिलेख में दर्ज था जिसका मूल **खसरा नंबर** 192/10, 192/18, 192/12, 192/1-2 है। अत: उक्त आवेदित भूमि को आवेदक अपने नाम पर दर्ज करने तथा **खसरा नंबर 192/19 रकबा 0.055 हे.. खसरा नंबर 174/1 का भाग रकबा 0.202हे.** खसरा नंबर **189/7 का भाग रकबा 0.412हे.** को रोड रास्ता हेतु दर्ज किये जाने का निवेदन किया है।

अत: आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन के संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था को दावा/आपत्ति प्रस्तुत करना हो वे नियत सुनवाई **दिनांक** 16/05/2025 तक स्वत: या अथवा वैध प्रतिनिधि के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। नियत समयावधि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर न्यायालय द्वारा विचार नहीं किया जावेगा।

आज **दिनांक** 02/05/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

मुहर

नायब तहसीलदार
रायपुर

तृतीय चरण में ग्राम परसतराई में लगा समाधान शिविर

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर प्रदेशभर में सुशासन तिहार 2025 का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में जिले के धरसीवा ब्लॉक के ग्राम परसतराई के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आज सुशासन तिहार के तीसरे चरण के अंतर्गत समाधान शिविर का आयोजन हुआ। सुशासन तिहार के अंतर्गत ग्राम परसतराई में अब तक 6,457 मांग और 181 शिकायतें प्राप्त हुए थी, जिनमें 6,593 आवेदनों का निराकरण हो चुका है।

न्यायालय तहसीलदार धरसींवा तहसील व जिला रायपुर (छत्तीसगढ़)

// इश्तिहार //

धरसींवा दिनांक 30.04.2025

क्रमांक / / ब-121/ वर्ष 2024-2525 ग्राम कन्हेरा, अछोली
प.ह.नं. 28, 27 रा.नि.मं. धरसींवा तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.)

एतद द्वारा सर्वसाधरण को सुचित किया जाता है आवेदक न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) रायपुर का **पत्र क्रमांक 43/3/वाचक/अ.वि.अ./2025 रायपुर दिनांक** 14.02. 2025 के माध्यम से पत्र प्राप्त हुआ है. जिसमें कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव जिला रायपुर द्वारा कलेक्टर महोदय रायपुर के समक्ष आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया जिसमें लेख कर बताया है कि **ग्राम कन्हेरा प.ह.नं.** 27 स्थित भूमि खसरा **नं. 384. 386, रकबा 0.809, 6.014हे.** की भूमि में से **4.00हे.** एवं ग्राम अछोली **28 स्थित भूमि ख.नं.** 105, 106 **रकबा 1.254, 0.138हे.** की भूमि को नगर पालिक निगम बीरगांव को आबंटित किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त अवेदन के संबंध में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को दावा/आपत्ति प्रस्तुत करना हो वे नियत सुनवाई **दिनांक 15.05.2025** तक स्वत: अथवा वैद्य प्रतिनिधि के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत समयावधि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर न्यायालय द्वारा विचार नहीं किया जावेगा।

आज **दिनांक 30.04.2025** को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

मुहर

तहसीलदार
धरसीवा

न्यायालय नायब तहसीलदार धरसींवा तहसील व जिला रायपुर (छत्तीसगढ़)

// इश्तिहार //

क्रमांक //ब-121/वर्ष 2024-25

धरसींवा, दिनांक 30.04.2025

ग्राम सोण्डरा, प.ह.नं. 25 रा.नि.मं. धरसींवा तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.)

एतद द्वारा सर्वसाधरण को सुचित किया जाता है अनुविभागीय अधिकारी (रा.) महोदय रायपुर का जावक **क्रमांक 598 दिनांक 17.04.2025** के तहत् पत्र प्रेषित किया गया है। जिसमें कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव द्वारा पत्र में लेख किया गया है जिसमें भारत सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन-शहरी 2.0 अंतर्गत रायपुर जिला के समस्त नगरीय निकायों में (नगर निगम रायपुर को छोड़कर) इनर्ट वेस्ट के निष्पादन हेतु सेनिटरी लैण्डफिल (एस.एल.एफ.) स्थापित किये जाने हेतु **राशि 132.10 लाख** के एक्शन प्लान की स्वीकृति प्रदान की गई है। जिला रायपुर हेतु नगर पालिक निगम बीरगांव में कॉमन सैनिटरी लैंडफिल स्थापित किये जाने के निर्देश प्रदान किये गये है। उक्त सैनिटरी लैण्डफिल (एस.एल.एफ.) स्थापित किये जाने हेतु निगम द्वारा शासकीय भूमि का सर्वे किया गया। जिसमें **ग्राम सोण्डरा प.ह.नं. 25 स्थित भूमि ख.नं.** 24/1 **रकबा 15.7610हे.** की भूमि को सैनिटरी लैण्डफिल (एस.एल.एफ.) स्थापित किये जाने हेतु शासकीय भूमि में से 6.10हे. भूमि नगर पालिक निगम बीरगांव को आबंटित करने हेतु पत्र प्रेषित किया गया है जिसका प्रकरण इस न्यायालय में दर्ज है।

अत: उक्त अवेदन के संबंध में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को दावा/आपत्ति प्रस्तुत करना हो वे नियत सुनवाई **दिनांक 15.05.2025** तक स्वत: अथवा वैद्य प्रतिनिधि के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत समयावधि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर न्यायालय द्वारा विचार नहीं किया जावेगा।

आज **दिनांक 30.04.2025** को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी ।

मुहर

नायब तहसीलदार
धरसीवा

सुशासन तिहार 2025 में दिव्यांग नागरिक को बैशाखी तुरंत प्रदान किया गया

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। आज नगर पालिक निगम भिलाई के वार्ड क्रं. 18 कांट्रेक्टर कालोनी हरा मैदान में शिविर आयोजित किया गया। सुशासन तिहार 2025 में नागरिको द्वारा पूर्व से आवेदन में मांग एवं शिकायत किया गया था। जिसका संबंधित विभाग द्वारा निराकरण कर आज शिविर में संबंधित आवेदकों को जानकारी दी गई। उनसे पूछा गया कि जो भी आपके द्वारा आवेदन किया गया था, उसका निराकरण कर दिया गया है, जिससे वह संतुष्ट है कि नहीं। साथ ही नागरिक का किसी प्रकार की मांग एवं शिकायत है, उसका आवेदन भी जमा किया जा रहा है। सुशासन तिहार में संबंधित वार्डों के कुल मांग के 220 एवं शिकायत के 72 आवेदन प्राप्त हुए थे। जिसमें मांग के 218 एवं शिकायत के 68 आवेदनों का निराकरण कर दिया गया है। शेष 6 आवेदन और बाद में 15 आवेदन प्राप्त हुए है, उसका निराकरण कर आवेदक को सूचित कर दिया जायेगा।

आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय, सभापति गिरवर बंटी साहू जोन आयुक्त अजय सिंह राजपूत शिविर का निरीक्षण करने पहुंचे। शिविर में बालाजी नगर खुर्सीपार निवासी दिव्यांग देवराज द्वारा सुशासन तिहार में बैशाखी के लिए आवेदन किया गया। जिसे महिला एवं बाल विकास विभाग के तरफ से समाधान शिविर में तत्काल बैशाखी प्रदान किया गया। इसी प्रकार जिन नागरिको का मांग एवं शिकायत था, उसे मौके पर निरीक्षण करके आवश्यकता अनुसार तत्काल पुरा किया जा रहा था। पुन: आवेदन हेतु शिकायत एवं मांग पेटी रखा गया था, जिसमें नागरिक अपने समस्या अनुसार आवेदन डाल रहे थे।

वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन समाधान शिविर में पहुंचकर अपने आधार को अपडेट करवाए। सभी काउंटर पर पहुंच करके जानकारी प्राप्त किये किस प्रकार के आवेदन आए हैं।

महापौर ने कहा- नाली के ऊपर स्लैप निर्माण को 24 घंटे के भीतर हटा लें दुकानदार, नहीं तो निगम तोड़ूदस्ता करेगी तोड़ने की कार्रवाही

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर निगम दुर्ग के 60 वाडों में 1 मई से 8 जून तक महापौर महा-सफाई अभियान की शुरूआत की गई है। मंगलवार को शहर के वार्ड 24 आमदी मंदिर सिंधी कालोनी से लेकर ग्रीन चौक से स्टेशन चौक मुख्य मार्ग तक नालियों की सफाई कार्य का पैदल घूमकर निरीक्षण किया और विभिन्न नाला-नालियों पर से अतिक्रमणों को हटाकर बेहतर ढंग से साफ-सफाई कराने और नाला-नालियों का बहाव व्यवस्थित करने के निर्देश दिए। महापौर ने कहा के भीतर नाली की साफ-सफाई व्यवस्था संतोषजनक न पाए जाने पर स्वास्थ्य अमले को बहुत नाराजगी जाहिर की।महापौर के निरीक्षण के मौके पर स्टेशन के सामने कुछ लोगो ने स्वयँ से शेड और अतिक्रमण हटाने लगे।महापौर ने कहा व्यवसायी ने दुकान के बाहर सड़को तक टीन शेड तिरपाल ओर विज्ञापन साइन बोर्ड यातायात पर प्रभाव पड़ता है साथ नाली के ऊपर पक्की सिमेंटी स्लैप निर्माण कर अतिक्रमण कर नाली जाम, पानी भरने, गंदगी सहित सफाई नहीं हो पाना आदि की समस्या बनी रहती है।

मौके पर नाली में सफाई अवस्वस्था देखकर दुकानदारों पर नाराजगी जाहिर करते हुए जोरदार फटकार लगाया। महापौर ने तत्काल मौके पर मौजूद अधिकारियों को सभी दुकानदारों को नोटिस जारी के साथ-साथ जुर्माना राशि वसूले के निर्देश दिए।उन्होंने सभी दुकानदारों से कहा 24 घंटे का समय की नाली के ऊपर स्लैप निर्माण को स्वयं तोड़कर जाली लगवाए।

न्यायालय तहसीलदार, मंदिर हसौद, जिला- रायपुर (छ.ग.)

// इश्तिहार//

क्रमांक /..0.../वाचक/तह./2025

मंदिर हसौद, दिनांक 25/4/25

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि अपर कलेक्टर एवं प्रभारी अधिकारी भू-आबंटन शाखा रायपुर के ज्ञापन क्रमांक/146/भू-आबंटन/2025 रायपुर, **दिनांक 04.04.2024** के द्वारा विधानसभा क्षेत्र आरंग अंतर्गत नगर पंचायत चंदखुरी जिला रायपुर हेतु अधोसंरचना मद अंतर्गत स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल निर्माण कार्य हेतु कार्य **आदेश क्रमांक 1024/ लो.नि.वि./नं.पं./2023-24 चंदखुरी दिनांक 04.10.2023** के आदेशानुसार **सृजन बिल्डकॉन रायपुर** को निर्माण कार्य करने का आदेश जारी किया गया है। वर्तमान मे भूमि उपलब्ध नहीं होने के कारण निर्माण कार्य विलंब है। नगर पंचायत चंदखुरी अंतर्गत सेवा भूमि मद मे दर्ज **खसरा नंबर 553 रकबा 2.530 हे.** मे स्कूल निर्माण हेतु 03 एकड भूमि आबंटन हेतु मांग किया गया है जो जांच एवं प्रतिवेदन हेतु अनुविभागीय अधिकारी (रा.) आरंग के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को दावा/आपत्ति होतो वे इस न्यायालय में **दिनांक 09/5/25** तक स्वयं या अपने अभिभाषक के माध्यम से आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है, नियत अवधि के बाद दावा आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।

अत: यह ईश्तहार आज **दिनांक 25/4/25** को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुद्रा से जारी किया गया है।

मुहर

तहसीलदार मंदिर हसौद
(छत्तीसगढ़)

कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0) रायपुर, जिला-रायपुर छ0ग0

// सूचना //

क्रमांक 747/का.से / अविअ/2025

रायपुर, दिनाक 30/04/2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता हैं. कि आवेदक मेसर्स श्री जी डेवलपर्स एण्ड मार्केटिंग द्वारा भागीदार **श्री राघवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय पिता श्री कृष्णकांत पाण्डेय निवासी सी-18, शैलेन्द्रनगर रायपुर छ0ग0 को ग्राम दत्तरेंगा प0ह0नं0 84 तहसील रायपुर** स्थित भूमि राजस्व अभिलेख के अनुसार खसरा नंबर-15019/1 (150/43 रकबा 0.089 हैं0. 150/44 रकबा 0.142 हैं0, 150/46 रकबा 0.101 हे0, 184/6 रकबा 0.040 हैं0, 184/7 रकबा 0.202 हैं0, 184/8 रकबा 0.210 हैं0, 185/2 रकबा 0.202 है0, 185/4. रकबा 0.202 हैं0, 185/5 रकबा 0.203 है0 186/1 रकबा 0.233 हे0, 186/2, रकबा 0.237 20, 185/20 रकबा 0.304 हैं0) कुल रकबा 2.1288 हैं0 भूमि पर कालोनी विकास की अनुमति विहित शर्तो के अधीन प्रदाय किया गया है।

छ.ग. पंचायत राज अधिनियम 1993 के नियम 12 (एक) अध्यधीन रहते हुए कालोनी के विकास कार्य पूर्ण होते संयुक्त संचालक नगर तथा ग्राम निवेश रायपुर द्वारा स्वीकृत अभिन्यास के अनुसार निम्नानुसार भूखंड को बंधक रखा जाता है-

क्र.	भूखंड क्रमांक	भूखंड एरिया	क्र.	भूखंड क्रमांक	भूखंड एरिया
1	01	51.25	13	40	128.00
2	08	46.50	14	51	142.50
3	09	69.50	15	52	127.50
4	16	76.00	16	58	78.50
5	17	87.00	17	59	155.50
6	24	96.00	18	72	55.00
7	25	97.00	19	73	55.00
8	26	109.00	20	74	55.00
9	27	116.00	21	75	55.00
10	28	124.00	22	76	53.00
11	37	142.00	23	77	53.00
12	39	164.50	24	78	54.00
		कुल योग-	24 भूखंड	2190.75	

कार्यालय सयुक्त संचालक ग्राम तथा नगर निवेश कार्यालय रायपुर के पत्र क्रमांक 473 नग्रानि/धारा-16/**CGAWAAS**/2022/00128 / 2023 रायपुर **दिनांक 16.02.2023** में ग्राम दतरेगा प0ह00 49 तहसील रायपुर स्थित भूमि खसरा नंबर 15019/1 (ख.न. 184/7. 184/6, 150/43) का भाग रकबा 3191.28 वर्गमीटर समाज के कमजोर आय वर्ग हेतु आरक्षित रखा गया है।

उपरोक्त भूखंडों का सक्षम प्राधिकारी के अनुमति/अनापत्ति के बिना किये गये क्रय/विक्रय अवैध / शून्य माना जावेगा ।

अनुविभागीय अधिकारी
(रा0) रायपुर छ0 ग0

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

निविदा सूचना

(1) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-26-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/डब्ल्यूआरएस/रायपुर के अधिकार क्षेत्र के तहत रायपुर रेलवे स्टेशन और सर्कुलेटिंग एरिया डीआरएम कार्यालय परिसर और अन्य सेवा भवन के सफेदी रंग, धुलाई, पेंटिंग, जल आपूर्ति और सिविल कार्यों के लिए जोनल कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 1,34,42,573/-, ईएमडीः ₹ 2,17,200/-.**

(2) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-27-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई/डब्ल्यूआरएस/बीएमवाई के अधिकार क्षेत्र के तहत जल आपूर्ति जोनल का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 88,11,877/-, ईएमडीः ₹ 1,60,200/-.**

(3) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-28-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए ADEN/II/भिलाई के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत सेवा भवन और कॉलोनी के लिए सिविल कार्य, सेफ्टी रंग-रोगन, पेंटिंग कार्यों के लिए क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 1,40,54,005/-, ईएमडीः ₹ 2,20,300/-.**

(4) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-29-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/बीएमवाई के अधिकार क्षेत्र के तहत बीएमवाई के कालोनी के जोन-।। और जोन-।।। में क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 77,92,206/-, ईएमडीः ₹ 1,55,900/-.**

(5) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-30-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एडीईएन/।।/भिलाई के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत सर्विस रोड और कॉलोनी सड़कों की मरम्मत के लिए क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 91,23,773/-, ईएमडीः ₹ 1,82,500/-.**

(6) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-31-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/बीएमवाई के अधिकार क्षेत्र के तहत पीपी यार्ड एक्सचेंज यार्ड, पूलिंग प्वाइंट, रनिंग रूम, क्रू लाबी और अन्य सेवा भवन में क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 68,72,493/-, ईएमडीः ₹ 1,37,500/-.**

(7) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-32-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/बीएमवाई के अधिकार क्षेत्र के तहत इलेक्ट्रिकल लोको शेड मेमू शेड डीएम ग्रिड सिक लाइन मानसून रिजर्व साइडिंग और अन्य सेवा भवनों और शेड में क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 74,51,826/-, ईएमडीः ₹ 1,49,000/-.**

(8) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-33-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/डब्ल्यूआरएस/रायपुर के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत लॉन फुलों की क्यारियां उद्यान आदि के रखरखाव सहित बागबानी क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 79,44,030/-, ईएमडीः ₹ 1,58,900/-.**

(9) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-34-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/डब्ल्यूआरएस/रायपुर के अधिकार क्षेत्र के तहत डीएलएस जीएसडी और टीएमएस के सेवा भवनों के लिए सफेदी रंग धुलाई, पेंटिंग और जंगल की सफाई सहित क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 1,26,41,970/-, ईएमडीः ₹ 2,13,200/-.**

(10) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-35-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/बीएमवाईके के अधिकार क्षेत्र के तहत जोन-। बीबीएमवाई कॉलोनी और पीपी यार्ड कॉलोनी में क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 77,92,206/-, ईएमडीः ₹ 1,55,900/-.**

(11) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-36-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/डब्ल्यूआरएस/रायपुर के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत वैगन रिपेयर शॉप के सर्विस बिल्डिंग के लिए सफेदी रंगाई पेंटिंग और जंगल की सफाई सहित क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 1,62,06,777/-, ईएमडीः ₹ 2,31,000/-.**

(12) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-37-25-26
दिनांक : 02.05.2025

कार्य का नाम- 30.06.2026 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एसएसई (वर्क्स)/बीएमवाईके के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत सफदी रंगाई और पेंटिंग के लिए क्षेत्रीय कार्यों का निष्पादन । **निविदा मूल्यः ₹ 97,24,073/-, ईएमडीः ₹ 1,94,500/-. निविदा प्रस्तुत करनाः 11.00 बजे तक दिनांक 30.05.2025, निविदा खोलनाः 11.00 बजे दिनांक 30.05.2025.**

विस्तृत विवरण/निविदा दस्तावेज की खरीद, पात्रता मानदंड एवं उपरोक्त कार्य के पूर्ण विवरण हेतु कृपया वरिष्ठ मंडल इंजीनियर, समन्वय/एसईसीआर रायपुर के कार्यालय से संपर्क करें अथवा हमारे वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध निविदा दस्तावेजों का अवलोकन/डाउनलोड करें ।

वरि. मंडल अभियंता-II
द.पू.म.रे., रायपुर

पीआर/आर/इंजी./एन/25

South East Central Railway @secrail

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)

ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./20704/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025

रायपुर दिनांक : **06-05-2025**

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20704
वार्ड का नाम-67-भक्तमाता कर्मा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 67 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR663H0002H** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती GAURISHANKAR RATHORE S/O CHAGAN LAL RATHORE 2. ANUSUIYA RATHORE W/O GAURISHANKAR RATHORE 3. N/A 4. SARITA RATHORE S/O NAVEEN KUMAR SINGH RATHORE** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती KHEMIN SINHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **POKHAN SINHA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)

ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./20706/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025

रायपुर दिनांक : **06-05-2025**

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20706
वार्ड का नाम-67-भक्तमाता कर्मा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 67 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR663HVCA24** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती M/S STAR VALLY BUILDERS INDIA PVT. LTD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DIR LOKENDRA PAWAR S/O B.L. PAWAR** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती TUKESHWARI DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHOBHIT RAM DEWANGAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)

ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./20705/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025

रायपुर दिनांक : **06-05-2025**

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20705
वार्ड का नाम-67-भक्तमाता कर्मा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 67 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR663HVCA25** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती M/S STAR VALLY BUILDERS INDIA PVT. LTD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DIR LOKENDRA PAWAR S/O B.L. PAWAR** के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती TUKESHWARI DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHOBHIT RAM DEWANGAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./**19858**/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025

रायपुर, दिनांक 28-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19858
वार्ड का नाम-05 - बंजारी माता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 05 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105H00191** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MEHATTAR PAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **SAMARU PAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE MEHATTAR PAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **....** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-1
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./**20420**/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025

रायपुर, दिनांक 30-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20420
वार्ड का नाम-05 - बंजारी माता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 05 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105B00180** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **CHEDILAL RAJBHAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **1 KISAN 2 N2 DINESH 3 RAJU RAJBHAR 4 AJAY RAJBHAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **CHEDILAL RAJBHAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **....** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-1
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./20618/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025

रायपुर दिनांक : 06-05-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20618
वार्ड का नाम-36- हवलदार अब्दुल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 36 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR436M0013A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ABDUL KARIM SETHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O HAJI ABDUL RAHIM SETHI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. SHIBA SETHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O ABDUL KARIM SETHI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./20611/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025

रायपुर दिनांक : 06-05-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20611
वार्ड का नाम-14- रमन मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 14 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR220B00031** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **BALWANT KAUR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O LATE. JAGJEET SINGH GIL , CHARANJEET SINGH S/O JAGJEET SINGH GIL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री चरणजीत सिंघ गिल** पिता/पति, श्री/श्रीमती पिता - **स्व. श्री जगजीत सिंघ गिल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./20609/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025

रायपुर दिनांक : 06-05-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20609
वार्ड का नाम-26- दानवीर भामाशाह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 26 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR108E0338A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ASHOK WADHWA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O NEWANDRAM WADHWA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती चंदन श्रुति वाधवा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति - स्व. डॉ. अशोका चंद्र वाधवा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./**20578**/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025

रायपुर, दिनांक **06-05-2025**

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20578
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR332A0142C** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DR. GOPI CHAND BHOJWANI** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O MITERO MAL BHOJWANI** केनाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री राजीव अग्रवाल** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता स्व. श्री बिमल कुमार अग्रवाल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री रमेश कुमार जायसवाल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर

email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा दीनदयाल उपाध्याय नगर कालोनी, डंगनिया, रायपुर में निर्मित एम.आई.जी योजना के अतंर्गत भवनों में से भवन **क्र. एम.आई.जी. II /461 सेक्टर-1, 1. श्री मोहर साय साहू पिता स्व. श्री लल्लू राम साहू 2. श्रीमती माया साहू पति श्री मोहर साय साहू** को स्ववित्तीय / एकमुश्त आधार पर आबंटित / नामांतरित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 19.11.2009** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी द्वारा उक्त फ्लैट / भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 26.04.2025** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर उक्त फ्लैट / भवन **श्री सिद्धार्थ शर्मा पिता श्री शंभू नाथ शर्मा** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जायेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./**20422**/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025

रायपुर, दिनांक 30-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20422
वार्ड का नाम-05 - बंजारी माता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 05 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105D0298A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DAYARAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GOSAI RAM** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **REKHA SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SOHAN LAL SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-1
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./**20421**/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025

रायपुर, दिनांक 30-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20421
वार्ड का नाम-05 - बंजारी माता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 05 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105G00166** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MADHURI DEVI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज, जिसको श्री/श्रीमती **RAKESH KUMAR BARANWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHARDA NAND PRASAD** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **HAK TIYAG VILEKH** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-1
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
दैनिक
विश्व परिवार
बिलासपुर संभाग
रायपुर बुधवार 07 मई 2025

कोयला से नदी ट्रक ने आर डी पेट्रोल पंप को मारी जबरदस्त ठोकर पेट्रोल पंप के परखच्चे उड़े

पेट्रोल पंप के चार कर्मचारी बाल बाल बच्चे ग्रामीण ने चालक को दौड़ा कर धर दबोचे

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-आज सुबह 10 बजे लापरवाह ट्रक चालक ने कोयला से भरी ट्रक को जोबगा स्थित आर डी पेट्रोल पंप को जबरदस्त ठोकर मार दी जिससे पेट्रोल पंप का परखच्चे उड़ गए तो वही पेट्रोल पंप में कार्यरत दो कर्मचारी सहित अन्य ग्राहक बाल बाल बच गए।

जानकारी के अनुसार ट्रक क्रमांक एम एल ओ 1ए जे 7191एस ई सी एल बिश्रामपुर के आमगांव खुली खदान से कोयला लोड कर जा रहा था इसी दौरान ट्रक चालक पेट्रोल लेने आर डी पेट्रोल पंप पर पहुंचा। लापरवाह एवं शराबी चालक ने ट्रक की रफ्तार तेज करते हुए सीधे पेट्रोल पंप को जबरदस्त ठोकर मारा और देखते ही देखते पेट्रोल पंप के पर परखच्चे उड़ गए । इस दुर्घटना में पेट्रोल पंप पूरी तरह से तबाह हो गया ।पेट्रोल पंप पर कार्यरत कर्मचारी रामेंद्र राजवाड़े, राजू यादव, हरिओम सिंह, डीके राजवाड़े सहित ग्राहक बाल बाल बच गए ।पेट्रोल पंप को देखने से ऐसा प्रतीत होता है की इतना जबरदस्त ठोकर से आग क्यों नहीं लगी परंतु कहते हैं कि राख सके साईंया मार सके न कोय इस कहावत का चरितार्थ होते उपस्थित जनों ने प्रात: 8 बजे लोगो ने देखा। बताया जाता है कि ट्रक कोयला लोड कर उड़ीसा जा रही थी इसके बावजूद लंबे रूट का ड्राइवर तेज रफ्तार से पेट्रोल पंप पहुंचा और देखते ही देखते ठोकर मार कर पेट्रोल पंप को ही उड़ा दिया वहां कार्यरत कर्मचारी एवं आम लोगों ने उछल-उछलकर अपनी जान बचाई ।उपस्थित लोगों ने बताया कि ट्रक चालक शराब इतनी पी रखी थी कि वह ट्रक पर से अपना नियंत्रण खो दिया और कोयला से लदी ट्रक सीधे पेट्रोल पंप को ठोकर मार कर उड़ा दी। इस दुर्घटना में पेट्रोल पंप के भारी नुकसान हुआ है। कर्मचारियों नेबताया कि पेट्रोल पंप का लगभग 3 से 4 लाख की क्षति पहुंची है। ट्रक चालक मौसम खान राजस्थान ने पेट्रोल पंप को ठोकर मार कर भागने का प्रयास किया परंतु आसपास के लोगों ने उसे धर दबोचा और सूरजपुर पुलिस को सूचना दी। समाचार लिखे जाने तक पुलिस मौके पर नहीं पहुंची है पेट्रोल पंप संचालक अमित गोयल ने बताया कि सबसे गनीमत रही की पेट्रोल पंप में आग नहीं लगी यदि आग लगती तो आसपास खड़ी वाहनों का क्षतिग्रस्त होने से कोई नहीं बचा सकता था वाहनों के साथ-साथ पेट्रोल पंप पर जो लोग खड़े थे वह भी दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं तथा भयंकर तबाही का सामना करना पड़ता। पेट्रोल पंप के साथ-साथ आसपास भीषण अग्निकांड का रूप धारण कर लेता जिससे जानवर माल की भयंकर नुकसान उठाना पड़ता परंतु ईश्वर की कृपा थी कि केवल पेट्रोल पंप का ही नुकसान हुआ और कर्मचारी बाल बाल बच गए। शराबी चालक भागने का प्रयास किया परंतु आसपास के लोगों ने उसे धर दबोचा और पुलिस को हवाले किया। पेट्रोल संचालक अमित गोयल ने बताया कि बहरहाल इस पूरे घटनाक्रम की जानकारी सूरजपुर पुलिस थाना को दे दी गई है तथा उचित कार्रवाई की मांग की गई है।

समय सीमा की बैठक में सुशासन तिहार के तृतीय चरण के सफल संपादन हेतु कलेक्टर ने दिया निर्देश

प्रत्येक शिविर में आयुष्मान कार्ड व आधार अपडेट करने हेतु लगेंगे स्टॉल

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर एस.जयवर्धन की अध्यक्षता में आज समय सीमा की बैठक रखी गई थी,जिसमें सुशासन तिहार के लंबित आवेदनों को लेकर विभागवार समीक्षा की गई और समस्त अधिकारियों को इनके शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए गए। कलेक्टर एस.जयवर्धन की अध्यक्षता में आज समय सीमा की बैठक रखी गई थी। जिसमें सुशासन तिहार के लंबित आवेदनों को लेकर विभागवार समीक्षा की गई और समस्त अधिकारियों को इनके शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए कि जिन विभागों मे सुशासन तिहार अंतर्गत मांग व शिकायत कम है वो शीघ्र इसका निराकरण करे वहीं जिन विभागों मे ज्यादा प्रकरण लंबित है वो इसे नगणय करने की दिशा में तेजी से कार्य करे। कलेक्टर के निर्देश पर प्रमुख विभाग विभागों की मांग व शिकायतों का वर्गीकरण कराया गया है, जिसमें प्राथमिकता के साथ क्रियान्वन हेतु दिशा निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ ही आज तृतीय चरण अंतर्गत शुरू हुए समाधान शिविर के सफल संपादन हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये गए। सभी अधिकारियो को सक्रियता के साथ शिविर उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया, इसके साथ ही आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए विशेष प्रयास करने की बात कही । उन्होने शिविर में आयुष्मान कार्ड व आधार अपडेट करने के लिए संबंधित अधिकारियों को स्टॉल लगाने के निर्देश दिए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों का आयुष्मान कार्ड बन सके और आधार कार्ड अपडेट हो सके ताकि पात्र हितग्राहियों को शासन के जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ ले सके।

ग्राम जयनगर समाधान शिविर में शामिल हुई केबिनेट मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े

सूरजपुर(विश्व परिवार)। सूरजपुर जिले के ग्राम पंचायत जयनगर में आज आयोजित समाधान शिविर में छत्तीसगढ़ शासन की केबिनेट मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े शामिल हुईं। शिविर के दौरान मंत्री ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के सुशासन में जनता की हर समस्या का प्राथमिकता से समाधान किया जा रहा है। मंत्री राजवाड़े ने उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि राजस्व संबंधी सभी प्रकरणों का समाधान बेहतर और शत-प्रतिशत रूप से सुनिश्चित किया जाए, जिससे आमजन को त्वरित लाभ मिल सके। मंत्री श्रीमती राजवाड़े द्वारा शिविर में लोगों से प्राप्त आवेदनों के आधार पर बी-वन दस्तावेज और राशनकार्ड का वितरण किया गया। मौके पर जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती स्वाति संत सिंह, उपाध्यक्ष श्री मनमत बछार, एसडीएम शिवानी जायसवाल, जनपद सीईओ विनोद सिंह, बीईओ सुनील पोरते सहित सभी विभागों के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। इस समाधान शिविर में कुल पंद्रह ग्राम पंचायतों के ग्रामीण अपनी विभिन्न मांगों और समस्याओं को लेकर उपस्थित हुए।

कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने ली कानून व्यवस्था की बैठक

सूरजपुर(विश्व परिवार)। जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने को लेकर आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन एवं पुलिस अधीक्षक श्री प्रशांत ठाकुर की अध्यक्षता में जिला एवं पुलिस प्रशासन के अधिकारियों की संयुक्त बैठक आयोजित की गई। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री संतोष महतो, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती चांदनी कंवर एवं श्री संजय मरकाम, सभी एसडीएम, तहसीलदार, पुलिस विभाग के अधिकारी एवं अन्य जिला स्तरीय अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। बैठक के दौरान जिले में शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए रणनीति पर चर्चा की गई। कलेक्टर श्री जयवर्धन ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में सतर्कता बरतें एवं असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखें। किसी भी तरह की अप्रिय स्थिति की आशंका होते ही त्वरित और सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। इसके साथ ही सड़क सुरक्षा पर भी चर्चा करते हुए उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम तथा यातायात में व्यवधान उत्पन्न करने वालों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। जिले में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने के उद्देश्य से कलेक्टर ने सर्विलांस सिस्टम को बेहतर करने के निर्देश दिए।

नगर प्रशासन सिविल द्वारा अनुबंध के अनुसार ठेकेदार द्वारा कार्य नहीं कराया जा रहा है-मंगला सिंह यादव

महाप्रबंधक सहित उच्च अधिकारियों को लिखा पत्र

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-बैकवर्ड क्लास कोल इंडिया एसोसिएशन वेलफेयर सोसाइटी बिलासपुर जोन के अध्यक्ष मंगल सिंह यादव ने एस ई सी एल बिश्रामपुर क्षेत्र के महाप्रबंधक सहित उच्च अधिकारियों को बिश्रामपुर के सिविल विभाग के कार्य में अनुबंध के अनुसार कार्य नहीं किए जाने का शिकायत महाप्रबंधक बिश्रामपुर सहित संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखकर ईश्वर ध्यान आकर्षित किया है। महाप्रबंधक बिश्रामपुर को लिखे अपने पत्र में बैकवर्ड क्लास कोल इंडिया एम्पलाइज वेलफेयर एसोसिएशन बिलासपुर जोन की अध्यक्ष महिला सिंह यादव ने उल्लेख किया है कि विश्रामपुर क्षेत्र के सिविल विभाग में भारी निर्माण कार्यों में अनियमित तथा की जा रही है। ठेकेदार को खुलेआम भ्रष्टाचार करने की छूट दे दी गई है। महाप्रबंधक को लिखे पत्र में श्री यादव ने उल्लेख किया है कि अनुबंध के अनुसार नगर प्रशासन सिविल में 2 वर्ष के लिए किए गए अनुबंध के अंतर्गत संबंधित ठेकेदार द्वारा साफसफाई एवं निर्माण कार्य नहीं किया जा रहा है। श्री मंगला यादव ने पत्र में उल्लेख किया है कि अनुबंध की अनुसार मजदूरों के आवासीय क्वार्टर का मरम्मत, महाप्रबंधक ऑफिस ,कोयला सेंपलिंग लैब,आरटीआई कके बीटीसी,बिश्रामपुर टाउनशिप आदि कार्यों का 2 वर्षों के लिए अनुबंध किया गया है ।अनुबंध के अनुसार ठेकेदार द्वारा कार्य नहीं किया जा रहा ,ठेकेदार गुणवत्ता विहीन कार्य खुलेआम कर रहा है। साफ सफाई में कामगारों की संख्या कम की जा रही है और पूरा अनुबंध के अनुसार वेतन लिया जा रहा है ।गुणवत्ता विभिन्न कार्य किया जा रहा है जिस कारण से कॉलोनी में साफसफाई एवं मजदूरों की आवास का मरम्मत कार्य गुणवत्ता विहीन किया जा रहा है। उक्त सभी दफ्तरों ,आवासों ,नालियों में एस आई मार्क सामग्री के बिना की कार्य किया जा रहा है। श्री यादव ने कार्य की जांच करा कर दोषी ठेकेदार पर कार्रवाई करने की मांग की है । मंगला सिंह यादव ने महाप्रबंधक विश्रामपुर सहित पीएमओ ऑफिस नई दिल्ली, अध्यक्ष प्रबंधन सी आई एल, सतर्कता आयुक्त नई दिल्ली, अध्यक्ष सह प्रबंधक निदेशक बिलासपुर सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखकर इस और ध्यान आकर्षित कराकर उचित कार्रवाई की मांग की है।

हर रोज लगते हैं गांव गांव में मंत्री का चौपाल मौके पर देती है अधिकारियों को समाधान करने का निर्देश

गांव-बस्ती चलो अभियान के तहत मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े का लोगों के प्रति दिखती है संवेदनशीलता

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-गांवों का विकास ही आत्मनिर्भर भारत की नींव है ङ्क इस मूलमंत्र को चरितार्थ करते हुए छत्तीसगढ़ शासन की कैबिनेट मंत्री व भटगांव विधायक श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने रविवार को सूरजपुर जिले के ग्रामीण अंचलों का भ्रमण किया। 'गांव-बस्ती चलो अभियान' के तहत उन्होंने ग्राम रैसरा, खड़ौली, जांज, रैसरी व चेंद्रा जैसे दूरस्थ पंचायतों में पहुंचकर ग्रामीणजनों के साथ आत्मीय संवाद स्थापित किया ।भीषण गर्मी में भी जमीन पर बैठकर मंत्री राजवाड़े ने जनचौपाल के माध्यम से ग्रामीणों की पीड़ा को प्रत्यक्ष सुना और त्वरित समाधान के निर्देश दिए। कहीं चबूतरे पर, तो कहीं स्कूल मैदान में ङ्क हर जगह उनकी उपस्थिति ने जनता को भरोसे और राहत का अहसास कराया। बहरहाल यह दौरा केवल जनसुनवाई नहीं था यह एक मानवीय लोकतंत्र की संजीवनी थी। जिसमें सत्ता का हर स्तर गांव के भीतर जाकर, लोगों की आंखों में देखकर यह वादा करता नजर आया कि आप अकेले नहीं हैं, सरकार आपके साथ है।

जन चौपाल बना जन संवाद का सशक्त माध्यम - रैसरा पंचायत से शुरू हुई इस जन संवाद यात्रा में खड़ौली के माध्यमिक शाला परिसर और जांज के स्कूल मैदान में सजी जन चौपालें जनभावनाओं की सजीव अभिव्यक्ति बनीं। पेयजल आपूर्ति की अनियमितता, खराब सड़कों, राजस्व प्रकरणों में विलंब जैसी समस्याएं प्रमुख रूप से सामने आईं ।मंत्री ने मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी समस्याओं का प्राथमिकता से निराकरण हो। उन्होंने खड़ौली मार्ग के निर्माण हेतु 10 लाख रुपए की घोषणा करते हुए इसे शीघ्र प्रारंभ करने की बात कही।

बैंक खोलने की मांग पर दिया भरोसा - रैसरी पंचायत के बगीचा पारा में आयोजित चौपाल में ग्रामीणों ने सहकारी बैंक शाखा खोलने की पुरजोर मांग की। उनका कहना था कि बैंकिंग सेवाओं के लिए उन्हें बिश्रामपुर तक जाना पड़ता है, जिससे समय और पैसे दोनों की बर्बादी होती है ।मंत्री राजवाड़े ने इस मांग को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभाग को अध्ययन कर आवश्यक पहल करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने कहा कि ग्रामीणों को वित्तीय सेवा उनके गांव में उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है।

सरल, सहज व सशक्त नेतृत्व की झलक- गांव की मिट्टी में रचने-बसने वाली मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े की जनसंपर्क शैली ने ग्रामीणों का दिल जीत लिया। न कोई मंच, न औपचारिकता ङ्क सीधे जमीन पर बैठकर लोगों की बात सुनी और संवेदनशीलता से समाधान का मार्ग खोला। उनके साथ पहुंचे अधिकारियों ने मौके पर ही कई शिकायतों का निराकरण करना शुरू कर दिया।

गांव-बस्ती में सजी चौपालें, सत्ता नहीं सेवा के स्वर - मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े सुबह निवास पर पहुंचे लोगों की समस्याओं व मांगों को सुनने के बाद सीधे क्षेत्र के गांव-गांव की गलियों में नजर आईं। कहीं बगीचे के किनारे चबूतरे पर बैठीं, तो कहीं स्कूल प्रांगण में ग्रामीणों की भीड़ के बीच जमीन पर ङ्क कोई मंच नहीं, कोई विशेष व्यवस्था नहीं, सिर्फ लोगों के बीच रहकर, उनकी पीड़ा और जरूरतों को आंखों में देखकर सुना।

जनप्रतिनिधि होना जिम्मेदारी है, सिर्फ पद नहीं- मंत्री राजवाड़े
हर चौपाल में मंत्री राजवाड़े का एक ही संदेश था ङ्क ऽमैं यहां विधायक या मंत्री बनकर नहीं, आपकी बेटी, बहन और प्रतिनिधि बनकर आई हूं। आपकी हर समस्या मेरी जिम्मेदारी है।ऽ उनका यह भावुक संवाद ग्रामीणों के दिलों को छू गया।

जन सरोकारों की प्रतीक बनी **यात्रा - हर गांव में उमड़ा जनसैलाब** - जहां-जहां मंत्री पहुंचीं, वहां ग्रामीणों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। वर्षों से उपेक्षित महसूस कर रहे लोगों को जब मंत्री स्वयं उनकी बस्ती में आकर सुनने लगीं, तो उन्होंने खुलकर अपने दुख-दर्द साझा किए। महिलाएं, किसान, बुजुर्ग ङ्क हर वर्ग की आवाज़ को मंत्री ने गंभीरता से सुना।

संक्षिप्त समाचार

5 वर्षों के बाद गायत्री भूमिगत खदान में घुसकर डकैती करने वाले फरार आरोपियों हुए गिरफ्तार

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) एस ई सी एल बिश्रामपुर क्षेत्र के गायत्री भूमिगत खदान के खान प्रबंधक संजय मिश्र ने थाना सूरजपुर में रिपोर्ट दर्ज कराया था कि गायत्री भूमिगत खदान परिसर में दिनांक 1.सितंबर 2020 को रात्रि करीब 1.30 बजे 10-12 अज्ञात व्यक्तियों के द्वारा घुसकर भण्डार गृह स्टोर रूम में सेंध लगाकर प्रवेश कर दहशत फैलाकर सुरक्षा प्रहरियों को बंधक बनाकर भण्डारगृह में रखे 15 मीटर पी.व्ही.सी. आर्ड केबल को चुराकर ले गए। रिपोर्ट पर आरोपियों के विरूद्ध धारा 395 भादसं. के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना के दौरान पूर्व में प्रकरण के 08 आरोपी व 01 विधि विरूद्ध संघर्षरत् बालक को पकड़ा गया था। प्रकरण के अन्य फरार आरोपियों के विरूद्ध धारा 173(8) जा.फौ. के तहत विवेचना जारी था। मामले में फरार आरोपीगण के गांव आने की सूचना पर पुलिस ने दबिश देकर आरोपी प्रताप चौधरी उम्र 57 वर्ष ग्राम तुलसी चौकी लटोरी ,राजकुमार अगरिया उम्र 40 वर्ष निवासी कसकेला चौकी लटोरी को 7. अप्रेल को गिरफ्तार किया गया था। इस मामले में 1 आरोपी फरार चल रहा था जिसकी पतासाजी की जा रही थी। डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने पुराने लंबित गंभीर अपराधों मामलों की समीक्षा करते हुए फरार आरोपियों की गंभीरतापूर्वक पतासाजी कर पकड़ने के निर्देश थाना-चौकी प्रभारियों को दिए है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो व सीएसपी एस.एस.पैंकरा के मार्गदर्शन में थाना सूरजपुर पुलिस ने प्राप्त सूचना के आधार पर फरार आरोपी संजय कुमार बरगाह पिता पातर साय उम्र 27 वर्ष ग्राम पोड़ी थाना सूरजपुर को पकड़ा। पूछताछ पर आरोपी ने जुर्म स्वीकार किया जिसे गिरफ्तार किया गया है। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी सूरजपुर विमलेश दुबे, एएसआई संजय सिंह यादव, आरक्षक रवि पाण्डेय, प्रदीप सोनवानी, रविराज पांण्डेय, दशरथ राम सक्रिय रहे।

कलेक्टर ,मंत्री एवं अधिकारियों के उपस्थिति में लगा ग्राम पंचायत जयनगर में समाधान शिविर

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-सूरजपुर जिले के ग्राम पंचायत जयनगर में आयोजित समाधान शिविर में सम्मिलित हुई तथा उपस्थित आमजनों को सम्बोधित करते हुए कहा की आप लोगो की हर समस्या का समाधान माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन मे किया जा रहा है व आगे भी किया जाएगा उपस्थित अधिकारीयों को कहा की आप लोग अच्छे से कार्य करें जिससे आम जनता को किसी भी प्रकार का परेशानी न हो विशेसकर राजस्व प्रकरण का समाधान जल्द करें!वरना किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दास्त नहीं की जायेगी!

इस अवसर पर लोगो से प्राप्त आवेदन के आधार पर बि वन व राशनकार्ड वितरण किया गया!कार्यक्रम मे मुख्यरूप से जिला कलेक्टर एस जयवर्धन

जनपद अध्यक्ष श्रीमती स्वाति संत सिंह जी, जनपद उपाध्यक्ष श्री मनमत बछार जी, एसडीएम शिवानी जायसवाल जनपद सीईओ विनोद सिंह बी ई ओ सुनील पोरतें पूर्व मंडल अध्यक्ष देवधन बिंझीया सभी विभाग के अधिकारी कर्मचारी व शिविर मे पंद्रह ग्राम पंचायत के ग्रामीण अपनी मांग व बातों को लेकर उपस्थित रहे

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर बुधवार 07 मई 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय पाकिस्तान के साथ निर्णायक युद्ध की घड़ी

वर्षों बाद भी व्यवस्था में कोई सुधार नहीं....

कॉमनवेल्थ घोटाले का मुकदमा भी ढह गया है। कहा जा सकता है कि जांच एजेंसियों और लेट-लतीफ न्याय व्यवस्था की खामी के कारण ऐसा हुआ है। मगर 15 साल बाद भी व्यवस्था नहीं सुधारी, तो उसके लिए दोषी कौन है? कॉमनवेल्थ खेल घोटाले का मुकदमा भी ढह गया है। दिल्ली की एक अदालत ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की मुकदमा बंद करने की रिपोर्ट स्वीकार कर ली है। यह कथित घोटाला उस कथानक का एक बड़ा पहलू था, जिसको लेकर 2010-11 में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन खड़ा किया गया। 2-जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाला, कोयला खदान आवंटन घोटाला और मुंबई की आदर्श हाउजिंग सोसायटी घोटाला इसके अन्य पहलू थे। तत्कालीन यूपीए सरकार ने उन सभी मामलों में कानूनी प्रावधानों के अनुरूप कार्रवाई की। सत्ता पक्ष से जुड़े कई नेताओं को अपने पद छोड़ने पड़े। कुछ को जेल की हवा भी खानी पड़ी। जो नेता जेल गए, उनमें सुरेश कलमाडी भी थे, जो कॉमनवेल्थ खेलों के आयोजन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण घेरे में आए थे। मगर तत्कालीन सरकार की कार्रवाइयों को अविश्वसनीय बताने का ऐसा जोरदार अभियान छेड़ा गया कि मनमोहन सिंह सरकार और कांग्रेस पार्टी की छवि खलनायक की बन गई। अन्ना आंदोलन और उसके गर्भ से निकली आम आदमी पार्टी उस आंदोलन के मूर्त रूप थे। लेकिन उसके पीछे बड़े सियासी और औद्योगिक हितों के हाथ की चर्चा तब से लेकर आज तक रही है। भारत के इतिहास में जब विवेकहीनता के मौजूदा माहौल की चर्चा होगी, तो इसकी जड़ों की तलाश उसी दौर में की जाएगी। तब भ्रष्टाचारियों को सरेआम फांसी पर लटकाने की मांग को लेकर उभारे गए जन उद्वेग ने आगे चल कर अन्य मसलों पर भी उसी तरह का माहौल बनाने का रास्ता साफ किया। जबकि न्यायिक धरातल पर उन कथित घोटालों से जुड़े एक के बाद एक मुकदमे ढहते चले गए। तब जिन्हें भ्रष्टाचारी मान लिया गया था, उनमें से ज्यादातर अब बरी हो गए हैं। कहा जा सकता है कि यह जांच एजेंसियों और लेट-लतीफ न्याय व्यवस्था की खामी है, जिससे इल्जाम साबित नहीं हो पाए। मगर मुद्दा यह है कि 15 साल बाद भी इस व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ और आरोपी बरी हो गए।

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

कारगिल के बाद तो अब तक आतंकवाद के रूप में यह युद्ध निरंतर चल रहा है। ट्रंप ने सही कहा है कि यह लड़ाई हजार-पंद्रह सौ साल से चली हुई है। अंतर केवल इतना ही है कि पहले हमले अरब, तुर्क या मुगल करते थे, लेकिन अब उनमें भारत पर हमले करने की हिम्मत तो नहीं बची है या फिर उन्हें शायद इसकी जरूरत भी नहीं है। अलबत्ता अब अपने ही वे लोग जिन्होंने इस कालखंड में इस्लाम ग्रहण कर लिया था, जब भारत पर हमला करते हैं तो तुर्क उनकी मदद पर आ जाते हैं अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने पहलगाम पर पाकिस्तान द्वारा किए गए परोक्ष आक्रमण करते हुए कहा कि यह झगड़ा एक हजार साल से चला हुआ है। दोनों पक्षों को इसे सुलझाना चाहिए। बहुत से लोगों ने इसके लिए ट्रंप पर विपरीत टिप्पणियां कीं। लेकिन लगता है ट्रंप ने जाने-अनजाने में इतिहास के एक बहुत बड़े तथ्य की ओर संकेत किया है। पाकिस्तान भारत के पश्चिमोत्तर का हिस्सा है। सन् 712 में हिंदुस्तान पर अरबों का पहला हमला इसी क्षेत्र के सिंध प्रदेश पर हुआ था। सरल शब्दों में कहना हो तो आज के कराची शहर पर हुआ था। आज 2025 तक आते-आते उस हमले को हुए लगभग 1300 साल हो गए हैं। उसके बाद इस क्षेत्र में कभी शांति नहीं हो सकी। सन् 1000 के आसपास तुर्कों ने इसी सप्त सिंधु क्षेत्र पर हमले करके इसे इस्लाम के घेरे में लाना शुरू किया था। पांच सौ साल तक यह दुखांत अबाध रूप से चलता रहा। लेकिन इन पांच सौ साल में हिंदुस्तान के पश्चिमोत्तर की बहुत सी जनसंख्या को डरा धमका कर या लालच से इस्लाम पंथ या शिया पंथ में मतांतरित कर दिया गया। संघर्ष और विरोध भी होता रहा। सन् 1500 के आसपास मुगलों ने हल्ला बोल दिया। उनके काल में तो 'इस्लाम में आ जाओ या फिर मरने की तैयारी करो' का माहौल बनने लगा। लेकिन विरोध भी उतना ही तीखा होने लगा। गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी तक की दशगुरु परंपरा इसी काल में शुरू हुई थी। लेकिन अब तक भारत का बहुत बड़ा हिस्सा मसलन बलूचिस्तान, खैबर पख्तूनखवा, सिंध प्रदेश और पंजाब का बहुत बड़ा हिस्सा इस्लाम पंथ को ग्रहण कर चुका था। अठारहवीं सदी में भारत पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। वे बीसवीं शताब्दी के मध्य में देश से तो चले गए, लेकिन जाने से पहले पश्चिमोत्तर भारत या सप्त सिंधु क्षेत्र के उस हिस्से को जो पिछले हजार साल में इस्लाम की चपेट में आ चुका था, पाकिस्तान नाम देकर भारत से अलग कर गए। उसके बाद अरबों, तुर्कों या मुगलों को हिंदुस्तान पर हमला करने की जरूरत नहीं पड़ी या फिर उनमें अब उतनी हिम्मत नहीं रही थी, लेकिन उनका यह काम भारत के ही उस हिस्से ने संभाल लिया जिसे अंग्रेज इस्लाम के आधार पर अलग करके गए थे। उसके बाद पाकिस्तान द्वारा 1947-48, 1965, 1971 में किए गए हमलों और उसके बाद कारगिल युद्ध को देखा जा सकता है। कारगिल के बाद तो अब तक आतंकवाद के रूप में यह युद्ध निरंतर चल रहा है। ट्रंप ने सही कहा है कि यह लड़ाई हजार-पंद्रह सौ साल से चली हुई है। अंतर केवल इतना ही है कि पहले हमले अरब, तुर्क या मुगल करते थे, लेकिन अब उनमें भारत पर हमले करने की हिम्मत तो नहीं बची है या फिर उन्हें शायद इसकी जरूरत भी नहीं है। अलबत्ता अब अपने ही वे लोग जिन्होंने इस कालखंड में इस्लाम ग्रहण कर लिया था, जब भारत पर हमला करते हैं तो तुर्क उनकी मदद पर आ जाते हैं। तुर्की इस समय यही कर रहा है। लेकिन अब मुख्य प्रश्न यही है कि क्या पंद्रह सौ साल से चली आ रही इस लड़ाई को खत्म करने का वक्त आ गया है? यह सवाल इसलिए भी जोर पकड़ रहा है क्योंकि इस समय देश में प्रधानमंत्री के पद पर नरेंद्र मोदी हैं और देश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। भारतीय जनता पार्टी अपने जनसंघ काल से ही इस लंबी लड़ाई को निर्णायक रूप से खत्म करने के पक्ष में रही है। कुछ तथाकथित विद्वान इसकी व्याख्या यह कह कर करते हैं कि भारतीय जनता पार्टी इस्लाम पंथ और शिया पंथ के खिलाफ है। भाजपा किसी के खिलाफ नहीं है, वह भारत के पक्ष में है। भाजपा यह मानती है कि इस देश में भगवान की पूजा के हजारों तरीके हैं, उनमें नमाज पढ़ कर ईश्वर की आराधना भी एक है। इसी प्रकार ईश्वर के नाम भी अनेक हैं, उनमें से अल्लाह भी एक है। इसलिए विरोध का तो प्रश्न ही नहीं है। अलबत्ता भगवान की पूजा करने के जितने तरीके हैं, उन सभी के आधार पर देश के उतने टुकड़े नहीं किए जा सकते। पाकिस्तान नाम का टुकड़ा इसी आधार पर देश से अलग किया गया था। यह आधार ही गलत था। भाजपा मानती है कि यह घृणित कार्य साम्राज्यवादी यूरोपीय ताकतों ने किया था, जिन्हें भारत को कमजोर रखने के लिए इसकी जरूरत थी। पाकिस्तान के एक मंत्री ने तो सार्वजनिक रूप से यह मान ही लिया है कि हम पिछले चालीस साल से ब्रिटेन-अमेरिका के कहने से भारत के खिलाफयह गंदा काम कर रहे हैं। पाकिस्तान के इन गंदे कामों के कारण ही भारत में यह मांग उठ रही है कि हजार-पंद्रह सौ साल से चले आ रहे इस युद्ध को समाप्त करने का सही समय आ गया है। इतिहास में ऐसे क्षण आते हैं। पाकिस्तान में भी बलूचिस्तान, खैबर पख्तूनखवा, सिंध प्रदेश से यह मांग उठ रही है। यह सब इलाके पाकिस्तान में नहीं बने रहना चाहते। लेकिन भारत के अंदर इस संभावित निर्णायक युद्ध के समय क्या स्थिति है, इस पर चर्चा करने से पहले मुझे बाबा साहिब अंबेडकर का संविधान सभा की अंतिम बैठक में दिया गया ऐतिहासिक भाषण याद आ रहा है। बाबा साहिब ने कहा था, 'मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध पर चढ़ाई के समय राजा दाहिर सेन के सैन्य कमांडरों ने मुहम्मद बिन कासिम के एजेंटों से रिश्वत ले ली और अपने स्वयं के राजा के पक्ष में लडने से मना कर दिया। वह जयचंद ही था जिसने भारत पर आक्रमण करने और पृथ्वीराज चौहान से लडने के लिए मुहम्मद गौरी को भारत में आमंत्रित किया और उससे स्वयं सोलंकी राजाओं के साथ उसकी सहायता करने का वादा किया। जब शिवाजी हिंदुओं की मुक्ति के लिए लड़ रहे थे, तो कई अन्य मराठा राजवंश और राजपूत राजा मुगल सम्राटों के साथ मिलकर उनके खिलाफलड़ाई लड़ रहे थे। ङ्क क्या इतिहास स्वयं को दोहराएगा? यह ऐसा विचार है जो मुझे चिंतित करता है। यह चिंता इस तथ्य के बोध से और अधिक गहरी हो जाती है कि 'जाति' और 'पंथ' के रूप में हमारे पुराने शत्रुओं के अतिरिक्त, अब हमारा साथ बहुत से राजनीतिक दलों व उनके विविध एवं विरोधी राजनीतिक पंथों के साथ भी जुडने जा रहा है। क्या भारतीय अपने देश को अपने पंथ से ऊपर रखेंगे या वे देश के ऊपर पंथ स्थापित करेंगे? मुझे नहीं पता। लेकिन यह बहुत निश्चित है कि यदि इन राजनीतिक दलों ने देश से ऊपर पंथ रखा, तो हमारी स्वतंत्रता को दूसरी बार संकट में डाल दिया जाएगा और संभवत: यह हमेशा के लिए खो जाएगी। इस परिस्थिति में हम सभी को दृढ़ता से हमारे रक्त की आखिरी बूंद के साथ हमारी स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए।' बाबा साहिब इसको लेकर चिंतित थे। उनकी चिंता जायज थी। आज इस निर्णायक घड़ी में देश की सबसे पुरानी पार्टी, जिसने 1947 में पाकिस्तान बनने से पहले की अपनी कार्यकारिणी की अंतिम बैठक में भारत के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण के पक्ष में प्रस्ताव पारित किया था, जिस प्रकार का व्यवहार कर रही है, वह चिंता पैदा करता है। कांग्रेस के इन वरिष्ठ और कनिष्ठ जनों के बयानों को पाकिस्तान का मीडिया सबसे ज्यादा भारत के विरोध में प्रयोग कर रहा है। लेकिन अभी देखना होगा कि ये लोग भारत के भविष्य की इस अंतिम निर्णायक लड़ाई में कितनी दूर तक पाकिस्तान को सहायता पहुंचाने वाली 'सिर तन से गायब' वाली तस्वीरों का उत्पादन करते हैं। बहरहाल, भारतीय सेना निर्णायक लड़ाई की तैयारी में लगी है।

आलेख

पहलगाम की घटना से सदमे में घाटी में लोगों

हरिशंकर व्यास

कश्मीर घाटी और कश्मीरियों का बदलना आंखों देखा है। साक्षात आज सामने है! क्या किसी ने सपने में कभी सोचा कि पुराने श्रीनगर, डाउनटाऊन श्रीनगर में आतंकी घटना के विरोध में लोग दुकानें बंद रखेंगे! पर वैसा हुआ। कश्मीर में बंद रहा। लाल चौक में बंद और प्रदर्शन हुआ। घाटी में लोग यह खबर सुन सदमे में थे कि पहलगाम में आतंकियों ने पर्यटकों को मारा है! खुद पहलगाम में अगले दिन मुख्य सड़क पर लोगों ने घटना के खिलाफ बड़ी संख्या में प्रर्दशन किया! कोई आश्चर्य नहीं जो कश्मीरियों की इस प्रतिक्रिया से वह संगठन भी घबरा गया, जिसने छूटते ही हमले की जिम्मेवारी ली थी। घाटी से भाग कर आए पर्यटकों ने लाइव बताया है कि हमले के बाद कश्मीरियों, मुसलमानों ने उनकी हर संभव मदद की। इंसानियत दिखलाई। बेरूखी, नफरत की बजाय दुख, पीड़ा और हमदर्दी की संवेदना में माना कि बहुत बुरा हुआ! ऐसे ही श्रीनगर के अखबारों, मीडिया ने घटना की निंदा और भर्त्सना में कमी नहीं दिखाई। क्या यह धंधा चौपट होने के स्वार्थ में था? या प्रशासन-सरकार के दबाव में था? ऐसा यदि कुछ मानें भी तो पुराने श्रीनगर में दुकानों का शटडाउन होना, जामा मस्जिद में जुमे की नमाज में मीर वाइज का एक मिनट का मौन रखवाना और आतंकी हमले की भर्त्सना के क्या अर्थ हैं? मेरे लिए, शेष भारत के लिए यह सब अविश्नसनीय सा है। दरअसल घाटी और घाटी के मुसलमानों की नीयत के साथ इस्लाम को ले कर हममें जैसी जो धारणा पैठी हुई है उसमें यह मानना, समझना आसान नहीं है कि जिंदगी की जरूरत भी जीना बदलवा सकती है। आबोहवा बदलवा सकती है। घाटी व कश्मीरियों का बड़ा सत्य यह अनुभव है जो अनुच्छेद 370 हटने के बाद उन्होंने कुछ नया फील किया। लोगों की मनोदशा में, नई पीढ़ी, लड़के-लड़कियों, महिलाओं और उस पीढ़ी ने यह महसूस किया कि कुछ भी हो, अमन से सुकून की जिंदगी है। अमन है तो जिंदगी न केवल सामान्य और सहज होती है, बल्कि कमाई चौतरफा बढ़ती है। आबोहवा बदलती है। शहर बदलता है। श्रीनगर, स्मार्ट सिटी होता है। घाटी की पैदावार की बिक्री से लेकर शिक्षा, परिवहन सबमें बेहतरी मुमकिन है। पर्यटकों का सैलाब आ सकता है। रोजगार और कमाई के अवसर बढ़ सकते हैं। मेरा मानना है कि 1987 के धांधली वाले विधानसभा चुनावों से घाटी की बरबादी के शुरू सफर से बनी कश्मीरी इमेज में नया मोड़ बनवाने वाली तारीख पांच अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 का हटना था। अब दूसरा मोड़ 22 अप्रैल 2025 को कश्मीरियों की प्रतिक्रिया का है। पहलगाम की घटना ने कश्मीरियों में जुगुप्सा, आतंकियों के प्रति तटस्थता, नाराजगी या गुस्सा या असहमति कुछ भी बनाई हो वह अनहोनी बात है। और इसे गहराई से समझने की जरूरत है। उसी अनुसार सरकार और प्रशासन को घाटी में लोगों को संभालना, हैंडल करना चाहिए। पाकिस्तान से हमारी दुश्मनी, हिंदू बनाम मुस्लिम की राजनीति अपनी जगह चाहे जो पाले रखें लेकिन इसके तनाव और लड़ाई में घाटी की जमीनी मनोदशा को न समझना, उसकी केयर न करना, उसे पाकिस्तानी मनोदशा का मानना ढाक में तीन पात वाली स्थिति लौटाने वाली गलती होगी। बेसिक दिक्कत मेरे, आपके और शेष भारत की घाटी और कश्मीरियों के प्रति बनी हुई धारणा और दिमाग में पैठी इमेज की है। यह अविश्वास है कि न कश्मीर बदला है और न कश्मीरी बदल सकते हैं। और अविश्वास का ताजा, खतरनाक बिंदु तब दिखा जब गृह मंत्री अमित शाह ने श्रीनगर में सुरक्षा संबंधी बैठक में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को नहीं बैठाया! भला क्यों? क्या अब्दुल्ला और उनका परिवार भरोसेमंद नहीं है? क्या वे महज दिखावे के मुख्यमंत्री हैं? क्या वे आतंकियों के भेदिए, पाकिस्तानी एजेंट या अलगाववादी हैं? स्वतंत्र भारत का दुर्भाग्य है, गंवारपने और मूर्खताओं की इंतहां है जो आईबी, रॉ जैसी खुफिया एजेंसियों से देश का प्रधानमंत्री हो या गृह मंत्री या गृह मंत्रालय के कश्मीर डेस्क के अफसर असुरक्षाओं में ऐसे जीते हैं कि एक आईबी चीफ बीएन मलिक ने पंडित नेहरू के कान भर कर शेख अब्दुल्ला को बरखास्त करवाया तो 1984 में आईबी चीफ एमके नारायणन ने फारूक अब्दुल्ला को बरखास्त करवाया। वही 2014 से मोदी सरकार को खुफिया प्रमुख अजित डोवाल घाटी के अब्दुल्ला और मेहबूबा को उसी निगाह, उसी समझ, उसी मनोवृत्त में समझाते हैं, जैसे उनके पूर्ववर्ती एमके नारायणन या बीएन मलिक समझाते थे।

न्यायपालिका की आलोचना मौजूदा राजनीतिक माहौल

अजीत द्विवेदी

न्यायिक सक्रियता की हमेशा आलोचना होती रही है। यह आम धारणा है कि सरकार कमजोर होती हैं तो न्यायपालिका सक्रिय हो जाती है और वह विधायिका व कार्यपालिका दोनों के अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण करती है या करने की कोशिश करती है। भारत में न्यायिक सक्रियता की सबसे तेज गूंज तभी सुनाई दी थी, जब देश में गठबंधन की सरकारों का दौर शुरू हुआ। आठवें दशक के आखिरी दिनों से लेकर समूचे नब्बे के दशक में भी न्यायपालिका खूब सक्रिय रही। अनायास नहीं है कि उसी दौर में जजों की नियुक्ति और तबादले का कॉलेजियम सिस्टम भी शुरू हुआ। उस समय सर्वोच्च अदालत के फैसलों से कई नीतियां तय हुईं। आरक्षण की सीमा तय करने से लेकर क्रीमी लेयर बनाने तक के सारे काम उसी दौर में हुए। तब भी न्यायपालिका की खूब आलोचना होती थी। लेकिन उस समय की आलोचना और अभी हो रही आलोचना में एक बुनियादी फर्क है। उस समय अदालतों के फैसले के गुणदोष पर ज्यादा चर्चा होती थी। हर फैसले को उसके गुणदोष की कसौटी पर कसा जाता था। आलोचना के लिए संवैधानिक तर्क दिए जाते थे। लेकिन अब आलोचना में बौद्धिक दरिद्रता झलकती है। अब फैसले के गुणदोष पर बात नहीं होती है और न फैसले को गलत साबित करने के लिए कोई संवैधानिक तर्क दिया जाता है। अब न्यायपालिका की आलोचना राजनीति में चलने वाले कुतर्कों से की जाती है। मिसाल के तौर पर तमिलनाडु के राज्यपाल द्वारा विधानसभा से पारित 10 विधायकों को लंबे समय तक लंबित रखने के मामले में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के फैसले की जो आलोचना हो रही है उसमें इस फैसले को संवैधानिक प्रावधानों की कसौटी पर गलत साबित करने का एक भी तर्क नहीं दिया जा रहा है। कहा जा रहा है कि अदालतें कानून बनाने लगेंगी तो संसद और विधानसभाओं में ताला लगा देना चाहिए। लेकिन क्या कोई बता सकता है कि अदालत ने कौन सा कानून बना दिया है? कानून तो बना हुआ है कि विधानसभा से पारित किसी भी विधेयक को राज्यपाल मंजूरी देंगे या वापस लौटाएंगे या राष्ट्रपति के पास विचार के लिए भेजेंगे। यही तीन विकल्प हैं। कानून में यह भी लिखा हुआ है कि अगर राज्यपाल ने विधेयक लौटाया है और विधानसभा उसे दोबारा पारित करके भेजेगी तो अनिवार्य रूप से राज्यपाल को उस पर मंजूरी देनी होगी। यह सब संविधान में लिखा हुआ है। लेकिन इस कानून में एक लूपहोल खोज लिया गया कि इसमें यह नहीं लिखा गया है कि कितने समय में बिल को मंजूरी देनी है या कितने समय में लौटाना है। इस लूपहोल के आधार पर बिल तीन तीन साल लटका दिए गए। सुप्रीम कोर्ट ने सिर्फ इस संवैधानिक प्रावधान की व्याख्या की है और उसकी विसंगति को दूर किया है। सोचें, आमतौर पर कानून से बचने के लिए आरोपियों के वकील कानून के लूपहोल्स निकालते हैं। लेकिन जब संवैधानिक प्राधिकार लूपहोल्स का इस्तेमाल करने लगे तो क्या किया जाए! बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध करने वाले तमाम सांसदों, नेताओं, कथित बुद्धिजीवियों, यूट्यूबर्स आदि को पढ़ने और उनके वीडियो सुनने के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि मेरिट पर भले फैसला सही हो लेकिन न्यायपालिका में बहुत कमियां हैं इसलिए उनका फैसला गलत है। फैसले का विरोध करने वाले 'विद्वानों' ने जो तर्क दिए, उनमें से कई बहुत दिलचस्प हैं। कहा गया, कॉलेजियम के जरिए जजों की नियुक्ति और तबादले होते हैं और इसमें भाई-भतीजावाद होता है, अमुक व्यक्ति को जमानत देने के लिए एक चीफ जस्टिस ने एक दिन में दो बार बेंच बदली, अमुक व्यक्ति के लिए छुट्टी के दिन बेंच बैठी, अमुक व्यक्ति के मामले में सुनवाई के लिए आधी रात को अदालत खुली, अमुक जज के यहां से नोटों के बंडल निकले लेकिन एफआईआर नहीं हुई, अदालतों में बहुत छुट्टियां होती हैं, अदालतों में करोड़ों मामले लंबित हैं, जज महीनों तक फैसला सुरक्षित रख लेते हैं, जज अपनी संपत्ति का ब्योरा नहीं देते हैं आदि आदि। 'विद्वानों' ने यह साबित किया है कि अदालतें अब भी कांग्रेस के हिसाब से चलती हैं क्योंकि कांग्रेस आजादी के समय से वकीलों की पार्टी रही है। यह भी कहा जा रहा है कि अमुक वकील के पिता भी किसी हाई कोर्ट के एडवोकेट जनरल थे या अमुक आरोपी के पिता कई बरसों तक अटॉर्नी जनरल रहे। सोचें, इसमें राज्यपाल और राष्ट्रपति पर दिए गए फैसले का पहलू कहां है? बौद्धिक दरिद्रता का आलम यह है कि न्यायपालिका की आलोचना के लिए पंडित जवाहर लाल नेहरू की सरकार द्वारा किए गए पहले संविधान संशोधन की तरफदारी की जा रही है और यह भी याद दिलाया जा रहा है कि इंदिरा गांधी व राजीव गांधी ने हैसियत बता दी थी न्यायपालिका की। इस पूरी जमात का सबसे बड़ा बौद्धिक तर्क यह है कि देश के करोड़ों लोगों ने जिनको चुना है वे सबसे ऊपर हैं और काला कोट पहनने वाले दो या पांच लोग तय नहीं करेंगे कि देश के लिए क्या अच्छा है। यह एक धूर्ततापूर्ण तर्क है, जो संवैधानिक व्यवस्था की बजाय चुनी हुई सरकार की तानाशाही की तरफदारी करता है। अगर इस तर्क को मानें कि चुनी हुई सरकार सबसे ऊपर है और उसे ही यह तय करने का अधिकार है कि देश और उसकी जनता के लिए क्या अच्छा है तो फिर किसी भी मसले पर अदालतों के फैसलों की क्या जरुरत है? सोचें, यही कुपढ़ और अपढ़ लोग जो एक फैसले के लिए न्यायपालिका की बखिया उधेड़ रहे हैं उन्होंने उसी न्यायपालिका के कितने फैसलों का जश्न मनाया है! जब काला कोट पहनने वाले लोग कुछ भी तय नहीं कर सकते हैं तो फिर उनके फैसलों पर जश्न मनाने की क्या जरुरत है? असल में इनकी तारीफों की तरह ही इनकी आलोचना भी दिशाहीन और बुद्धिनिरपेक्ष है। सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या की जमीन हिंदू पक्ष को दे दी।

इजरायल के नक्शे-कदम पर चले भारत

प्रताप सिंह पटियाल

हमारे हुक्मरानों को इजरायल के नक्शेकदम पर चलकर पाक परस्त आतंक को खत्म करने का हलफ उठाना होगा। आतंक के आकाओं के खिलाफ बेबीलोन के शासक 'हम्मुराबी' के कानून 'आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत' को अमल में लाना होगा आलेख के शुरुआत में एक बार फिर 'सआदत हसन मंटो' की तहरीर को दोहराना पड़ेगा कि जब 'मजहब दिल से निकल कर दिमाग को चढ़ जाता है तो जहर बन जाता है।' 16 अप्रैल 2025 को इस्लामाबाद में आयोजित पाकिस्तानी आप्रवासी इजलास में पाक जनरल आसिम मुनीर ने भारत तथा हिंदुओं के खिलाफ हिकारत भरी बयानबाजी करके अपना असली चेहरा पेश किया। मुनीर ने कहा कि हिंदू और मुसलमान एक साथ नहीं रह सकते। मुनीर की उस जिहादी तकरीर से आतंकी आकाओं को काफी हद तक ऑक्सीजन मिली। नतीजतन 19 अप्रैल 2025 को पाकिस्तान के सिंध में हिंदू सांसद 'खीलदास कोहिस्तानी' पर कट्टरपंथियों ने हमला कर दिया। 22 अप्रैल 2025 को कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों ने 26 बेगुनाह पर्यटकों को मौत के घाट उतार दिया। दौराने तकरीर में आसिम मुनीर ने 'कलमा-ए-तौहीद' का जिक्र किया था। पहलगाम में पर्यटकों को हलाक करने से पहले आतंकियों ने कलमा पढने को कहा। जो नहीं पढ़ सके उन्हें गोली मार दी गई। विडंबना है कि मजहब की बुनियाद पर हिंदोस्तान का बटवारा हुआ, मगर हिंदुओं के प्रति पाकिस्तान की नफरती सोच में बदलाव नहीं हुआ। पाकिस्तान के मजहबी रहनुमाओं ने हिंदुओं को हमेशा एक कमजोर कौम के तौर पर पेश किया है, जबकि उनके पूर्वज हिंदू ही थे। असीम मुनीर की तरह पाक जरनैलों ने सन् 1965 में पाक सेना को ये कहकर उकसाया था कि पाकिस्तानी एक 'लडाकू नस्ल' है, जो भारत के हिंदुओं को आसानी से हरा देंगे। इसी गलतफहमी में अमेरिकी पैटन टैंको से लैस पाक सेना की 'प्रथम टैंक डिवीजन' ने अमृतसर के खेमकरण सेक्टर पर हमला कर दिया। लेकिन भारतीय सेना ने पलटवार करके पाक टैंकों को खेमकरण की सरहद पर ही कब्रिस्तान में तब्दील करके पाक टैंक डिवीजन के कमांडर मेजर जनरल 'नासिर अहमद खान' को भी हलाक करके मैदाने जंग में ही सुपुर्दे खाक कर दिया था। इस बात का खुलासा पाकिस्तानी लेखक 'रसूल बक्स रईस' ने अपनी किताब में किया था कि पाक जरनैलों की धारणा कि उनकी 'लड़ाकू नस्ल' की सेना युद्ध में

'हिंदू भारत' को हरा देगी, गलत साबित हुई। तीन बड़े युद्धों में भारतीय सेना द्वारा शर्मनाक शिकस्त के बाद कश्मीर हथियाने में नाकाम पाक हुक्मरानों ने 1980 के दशक में पाकिस्तान को आतंक की दारुल हुकूमत बनाकर भारत के खिलाफ आतंक का रास्ता चुना। जिहाद के नाम पर पाक परस्त दहशतगर्दों ने सन् 1990 में कश्मीरी पंडितों का नरसंहार करके उन्हें घाटी छोडने के लिए मजबूर किया। कश्मीरी पंडित अपने ही देश में शरणार्थी बन चुके हैं। पाक मजहबी रहनुमाओं ने आतंकियों को जन्नत में 72 हूरों का ख्वाब दिखाकर घाटी को जहन्नुम बना डाला। घाटी में आतंकियों को स्थानीय आबादी की पूरी हिमायत हासिल है। मार्च 2000 में अनंतनाग के 'छत्तीसिंहपोरा' में आतंकियों ने 36 सिखों का कत्ल कर दिया था। अगस्त 2000 में अमरनाथ यात्रा के दौरान 32 तीर्थयात्रियों तथा जुलाई 2001 में 13 अमरनाथ यात्रियों को मौत के घाट उतारा गया था। सन् 2002 में चंदनवाड़ी बेस कैंप पर आतंकी हमले में ग्यारह अमरनाथ यात्री मारे गए थे। 23 मार्च 2003 को पुलवामा के 'नंदीमार्ग' में 24 कश्मीरी पंडित आतंकियों की टारगेट किलिंग का शिकार बने थे। फरवरी 2019 में पुलवामा के आतंकी हमले में 40 सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए थे। पुलवामा हमले के वक्त आसिम मुनीर 'आईएसआई' का चीफ था। पहलगाम का आतंकी हमला ऐसे वक्त में हुआ है, जब 26 नवंबर 2011 के मुंबई हमले का गुनाहगार पाक सैन्य अधिकारी 'तहब्बुर राणा' भारतीय सुरक्षा एजेंसियों की हिरासत में कई राज उगल रहा है। जिन विदेशी ताकतों ने सन् 1971 की जंग में पाकिस्तान की सैन्य व वित्तीय मदद की थी, भारत में हो रहे आतंकी हमलों में उन देशों की खूफिया एजेंसियों की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अन्यथा 'ग्लोबल फायर पावर' 2025 के अनुसार 12वें पायदान पर काबिज पाक सेना में इतना दम नहीं कि विश्व की चौथी ताकतवर भारतीय सेना को ललकार सके। देश में आतंकी हमला होने के बाद सर्वदलीय बैठकों का दौर शुरू हो जाता है, जबकि आतंक से सेना निपट रही है। युद्ध के मोर्चे पर हमारे शूरवीर सैनिक लड़ेंगे। अत: देश के शीर्ष नेतृत्व को सामरिक मुद्दों पर गुफ्तगू केवल सैन्य कमांडरों से करनी चाहिए। जब पड़ोस में आतंक का मरकज पाकिस्तान, बांग्लादेश व चीन जैसे मुल्क मौजूद हैं तो सैन्य पलटवार के लिए 'लक्ष्य' पहले से ही सुनिश्चित होने चाहिएं। खूफिया तंत्र मुस्तैद होना चाहिए। पिछले वर्ष हमास के कई टॉप कमांडर पाकिस्तान के बहावलपुर में तशरीफ लाए थे। पाक सेना की '31वीं कोर', '35 इंफैंट्री डिव.' व '26 मैकेनाइज डिवीजन' तथा आतंकी जमात जैश-ए-मुहम्मद के मुख्यालय भी बहावलपुर में मौजूद हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, बुधवार 07 मई 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

जैन तेरापंथ सरताज जन्मोत्सव विशेष

रायपुर (विश्व परिवार)। जैन तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज दिनांक 06/05/2025, मंगलवार को 64वें जन्मोत्सव उपलक्ष्य में आध्यात्मिक वातावरण में आध्यात्मिक भेंट अर्पण करने को ध्यानार्थ करते हुए एक सामायिक नेक सामायिक का आयोजन सुबह 9 से 10 बजे तक तेरापंथ अमोलक भवन में तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर द्वारा किया गया। जिसमें उपासक श्रेणी की गरिमामय सन्निधि रहीं। उपासिका श्रीमती ज्योति डागा ने आचार्य श्री का जीवन वृत्तांत प्रस्तुत करते हुए उनके अनछुए पहलुओं का बताया। उपासिका श्रीमती सरोज कोठारी ने प्रेक्षा ध्यान साधना का अनुठा प्रयोग करवाया। उपासक श्री गौतम गुलगुलिया ने ओ महाश्रमण गुरु राम मर्यादा पुरुषोत्तम... सुमधुर गीतिका का संगान करते हुए उनके संयम जीवन की गुण सरिता को सजाया। आध्यात्मिक आयोजन पश्चात जैन सात्विक स्वल्पाहार की व्यवस्था रखी गई जिसका आनंद संभागीय जनों ने लिया। आयोजन में विशेष रूप से गौतम गोलछा, नवरतन डागा, वीरेंद्र डागा, अभय गोलछा, विकास बरलोटा, जितेंद्र छाजेड़ उपस्थित रहे। **-वीरेंद्र डागा**

जैन मुनि का अपमान करने वाले पर करें कार्रवाई

छत्रपति संभाजीनगर (विश्व परिवार)। जैन मुनि राष्ट्रसंत संत शिरोमणि विद्यासागर महाराज के छायाचित्र को फेसबुक सोशल मीडिया पर अपमान जनक तरीके से लगाने वाले के विरुद्ध कार्रवाई की मांग श्री खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत पार्श्वनाथ मंदिर सकल जैन समाज की ओर से जिलाधिकारी, पुलिस आयुक्त, पुलिस अधीक्षक ग्रामीण को सौंपे गए ज्ञापन में की गई है। ज्ञापन में बताया गया कि सोशल मीडिया पर गाढे ज्ञानेश्वर भागाजी पाटील व बामनराव पिठमांगे नामक व्यक्ति ने जैन मुनि राष्ट्रसंत संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी महाराज के छायाचित्र को फेसबुक पर अपमान जनक तरीके से पोस्ट करने, उसी तरह भाजपा नेता नितेश राणे का चेहरा लगाकर अपमान करके प्रकाशित किया गया। जिससे सकल जैन समाज में नाराजगी फैल गई है। ज्ञापन में कथित दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई करके तत्काल गिरफ्तार करने की मांग की गई। ज्ञापन देते समय महावीर पाटणी, प्रकाश अजमेरा, अरण पाटनी, तीर्थ रक्षा कमेटी के उपाध्यक्ष संजय पापडीवाल, अग्रवाल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष मुकेश साहूजी, सचिव हर्षल साहूजी, जटवाडा तीर्थ क्षेत्र के विश्वस्त अशोक गंगवाल, श्वेतांबर जैन कॉन्फ्रेंस के अमित कुमार जैन, दिलीप पांडे, नरेंद्र अजमेरा, पीयूष कासलीवाल, कुणाल पांडे सहित पदाधिकारी उपस्थित थे।

सुशासन तिहार-2025 : 8 मई को वार्ड क्रमांक 5, 6, 9, 10, 11, 12 व 13 के लिये चिखली स्कूल में समाधान शिविर

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आम जनता को शासन की योजनाओं का लाभ देने उनसे संवाद स्थापित करने तथा उनकी समस्याओ के निराकरण के लिये आयोजित सुशासन तिहार 2025 के प्रथम चरण में समस्या संबंधी प्राप्त आवेदनों का द्वितीय चरण में समाधान के पश्चात आवेदको के समस्याओं का समाधान बताने तृतीय चरण में वार्डो में 5 मई से 31 मई 2025 तक प्रात: 10 बजे से संध्या 5 बजे तक समाधान शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर में नगर निगम के अलावा अन्य शासकीय विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रह कर आमजनों को उनकी समस्या का समाधान बतायेगे। शिविर के संबंध में आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा ने बताया कि 8 मई गुरूवार को वार्ड नं. 5, 6, 9, 10, 11, 12 व 13 के लिये चिखली स्कूल में प्रात: 10 बजे से संध्या 5 बजे तक समाधान शिविर लगाया जायेगा। जिसमें उपरोक्त वार्ड के नागरिक जिनके द्वारा अपनी समस्या संबंधी आवेदन दिये है, उनका समाधान बताया जायेगा। साथ ही शासन की योजनाओं का लाभ भी दिया जायेगा। उन्होंने उपरोक्त 7 वार्ड के वार्डवासियों से शिविर में उपस्थित होकर अपनी समस्याओ का समाधान जान, शासन की योजनाओ का लाभ लेने की अपील की है।

अष्टापद बद्रीनाथ प्रात: पूजन दीप आराधना हुई सम्पन्न

आप कुछ भी करो, कुछ भी कहो, ये संसार बिन स्वार्थ के नहीं चल सकता : आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

औरंगाबाद (विश्व परिवार)। अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज उत्तराखंड के बद्रीनाथ में विराजमान है आज उभय मासोपवासी साधना महोदधि प.पू. अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज उपाध्याय श्री 108 पियूष सागर जी महाराज आदिनाथ आध्यात्मिक फाउंडेशन अष्टापद बद्रीनाथ प्रात: पूजन दीप आराधना हुई संपन्न हुई संपन्न हुआ अभिषेक एवं शांतिधारा श्री दिगम्बर जैन मंदिर जिला चमोली में ससंघ की निर्विघिन संपन्न हुई आहारचार्य !आदिनाथ आध्यात्मिक फाउंडेशन अष्टापद बद्रीनाथ जिला चमोली उत्तराखंड अंतर्मना गुरुभक्त परिवार के द्वारा अष्टद्रव के सहित रूप से संपन्न हुई गुरुपूजन पश्चात बद्रीनाथ से 20 किलोमीटर की दुरी पर स्थिति निखिल पीठ के लिए हुआ मंगलमय पदविहार बद्रीनाथ से पदविहार करते हुए मार्ग के मध्य हुआ आचार्य मुनिराजो का रिमझिम बारिश के मध्य मिलन किया पाद पूजा एवं परिक्रमा निखिल पीठ जिला चमोली उत्तराखंड अलकनंदा नदी के किनारे संपन्न संध्या गुरुभाक्ति प्रवचन मंगल आरती आज 06/05/2025 जिला चमोली उत्तराखंड में आहारचर्या में होंगी वहां उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि ये तीन कार्य व्यर्थ है --सबको खुश करने की कोशिश, बदले का भाव, और गुजरे हुए वक्त में डूबे रहना। संसार स्वार्थ से चलता है आप कुछ भी करो, कुछ भी कहो, ये संसार बिन स्वार्थ के नहीं चल सकता।

बेटे चार प्रकार के होते हैं- पहला पुत्र- एक पिछले जन्म का लेनदार बेटा। उसे आप कितना भी पढ़ाओ, कितना भी लिखाओ, उसे बड़ा करो। उसका विवाह करो और बस चल बसता है। लेन देन पूरा हुआ और चल बसा, तो समझना वो लेनदार पुत्र था।दूसरा पुत्र पिछले जन्म का बेरी भी पुत्र होकर आता है। ऐसा पुत्र कदम कदम पर दुःख देता है, छाती पर मूंग डालता है, नाक में दम करके रखता है, ऐसा पुत्र - पुत्र के रूप में दुश्मन होता है और पिछले जन्म का पूरा बदला लेता है।तीसरा पुत्र उदासीन पुत्र होता है, ना मित्र होता है ना बैरी होता है, ऐसा पुत्र मां बाप को ना सुख देता है, ना दुःख देता है, , बस कहने का पुत्र होता है, बस कहने का।चौथा पुत्र होता है सेवक पुत्र। पिछले जन्म में आपने किसी की सेवा की और वही आपका पुत्र बनकर आ गया, ऐसा पुत्र सेवा करके सुख देता है। मां बाप की जो जी जान से सेवा करता है, बुढ़ापे का सहारा बनता ही है। मां-बाप की कीर्ति को भी बढ़ाता है। **-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल**

ब्रह्माकुमारीज द्वारा नवा रायपुर के सेक्टर-20 में शुरू हुआ समर कैम्प

खेल-खेल में बच्चों को मिल रही अध्यात्म और राजयोग की शिक्षा

समर कैम्प के माध्यम से देश का भविष्य संवर रहा है, स्कूलों में सिर्फ किताबी शिक्षा मिल रही है

नवा रायपुर (विश्व परिवार)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा नवा रायपुर के सेक्टर-20 स्थित एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड शान्ति शिखर में आयोजित समर कैम्प का शुभारम्भ श्री सत्यसाई हास्पीटल के चेयरमैन श्रीनिवास राव, कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलसचिव संदीप गाँधी, छात्र कल्याण अधिकारी श्रीमती विभा चन्द्राकर, अपेक्स बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर कमल नारायण काण्डे, रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी और ब्रह्माकुमारी रश्मि दीदी ने दीप प्रज्वलित करके किया।

बच्चों को सम्बोधित करते हुए श्री सत्यसाई हास्पीटल के चेयरमैन श्रीनिवास राव ने ब्रह्माकुमारी बहनों के तपस्वी जीवन और समर कैम्प की सराहना करते हुए कहा कि इतनी कम उम्र में दैवी गुणों से सम्पन्न बहनों को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूँ। यहाँ के शान्त और पवित्र वातावरण को देखकर मेरा भी समर कैम्प में शामिल होने का मन कर रहा है। मेरा मानना है कि दुनिया में ब्रह्माकुमारीज़जैसी अन्य कोई दूसरी संस्था नहीं है।

कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलसचिव संन्दीप गाँधी ने समर कैम्पके फायदे गिनाते हुए कहा कि बच्चों को इस समर कैम्प से अनुशासन के साथ-साथ मनोरंजन और मेडिटेशन सीखने का भी लाभ मिलने वाला है। आप बच्चे बहुत अधिक भाग्यशाली हैं कि आपको इतनी श्रेष्ठ संस्थान द्वारा आयोजित समर कैम्प में शामिल होने का अवसर मिला है।

अपेक्स बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर कमलकान्त काण्डे ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था समर कैम्प के माध्यम से देश के भविष्य को संवारने का श्रेष्ठ कार्य कर रही हैं। उन्होंने बच्चों को नैतिक मूल्यों के साथ ही घर और स्कूल में स्वच्छता और पर्यावरण पर भी ध्यान देने पर जोर दिया। हमारा लक्ष्य सिर्फ डॉक्टर इन्जीनियर बनना ही नहीं बल्कि अच्छा इन्सान बनने का होना चाहिए।

रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने कहा कि आजकल स्कूलों में सिर्फ किताबी ज्ञान ही दिया जाता है। इसलिए वर्तमान शिक्षा सिर्फ रोजगार प्रदान करने तक सीमित हो गई है। हम बच्चों को समर कैम्प के माध्यम से नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं जो कि आगे चलकर उनके जीवन में बहुत काम आने वाली है। उन्होंने बच्चों से कहा कि बड़ा आदमी बनना है तो कभी गुस्सा मत करना। झूठ नहीं बोलना और सबका सहयोगी बनकर रहना।

दुर्लभ चिंतामणि रत्न समान बड़े भाग्य से मिला है ये मानव कुल : मुनि श्री विभोरसागर जी महाराज

आस्रव 108 प्रकार के हैं इनसे मानव को बचना चाहिये- पंडित पारस जी शास्त्री

कोटा (विश्व परिवार)। पुण्योदय अतिशय क्षेत्र नसियां जी दादाबाड़ी कोटा में परम पूज्य आचार्य भगवन 108 श्री विद्या सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य गुरूदेव निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री 108 सुधा सागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा से आठ दिवसीय पुण्योदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का तृतीय दिवस पर अध्यक्ष जम्बू जैन सर्राफ ने पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार को बताया कि नसियां जी में 108 विभोर सागर जी महाराज व श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर जयपुर के विद्वान पारस शास्त्री व विद्वतजनों, सौरभ सिद्धार्थ शास्त्री, अभिषेक शास्त्री, दीपांशु शास्त्री, हेमन्त शास्त्री, शुभम शास्त्री, शशांक शास्त्री, रविन्द्र शास्त्री द्वारा बच्चों महिलाओं और पुरुषों को जैन धर्म की शिक्षण से बह रही है धर्म व अध्यात्म की गंगा...समोशरण जैसी लग रही है संत श्री के सानिध्य में नसिया जैन मंदिर 108 परम पूज्य मुनि श्री विभोर सागर जी महाराज ने प्रवचन के माध्यम से बताया कि जैन कुल मिलना बहुत दुर्लभ है, उसमें भी सम्यक अंगोपांग का मिलना, अगर अंगोपांग विकृत होते तो हम सही से धर्म का पालन नहीं कर पाते। पंडित पारस जी शास्त्री ने तत्त्वार्थ सूत्र जी की कक्षा में बताया कि शुभ योग से पुण्य और अशुभ योग से पाप 108 प्रकार के है आस्रव का कारण है। इसलिए हमें अशुभ आस्रव से बचना चाहिए।

संयोजक धर्मचंद जैन धनोप्या ने बताया कि आज के अल्पहार पुण्यार्जक श्री राजकुमार जी प्रीति जी पीहू जी सिद्धार्थ जी बाबरिया ने दीप प्रज्जवन कर महाराज श्री को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया कार्यकारणी ने पुण्यार्जक परिवार का तिलक माला दुप्पटे पगड़ी पहनाकर कर सम्मान किया।संयोजिका अर्चना रानी जैन सर्राफ ने बताया कि मंगल देशना बाद सभी शिविरार्थी अपनी अपनी बालबोध भाग (1) एक, बालबोध भाग (2) दो, छहढाला (पूर्वार्ध), छहढाला (उत्तरार्द्ध), इष्टोपदेश ग्रंथ, तत्वार्थ सूत्र, प्रश्नोत्तरी रत्नमालिका, समेत अन्य विषयों की वातानुकूलित कमरों में सामूहिक कक्षाएं में गयें, बालबोध भाग (1) की कक्षा, 812 डिजिटल डिस्प्ले एलईडी सॉफ्टवेयर से बच्चों को अध्ययन करवाया जा रहा है। निदेशक हुकम जैन काका ने बताया अपने विषय की प्राथमिक जानकारी के बाद 10 बजे सभी शिविरार्थी एवं आगन्तुक अतिथियों ने अल्पाहार ग्रहण किया। शाम कक्षाओ के बाद शीतल पैय प्रतिदिन पिलाया जायेगा और प्रतिदिन सुबह- शाम विधिवत कक्षाएं लगेगी। प्रतिवर्ष अधिक भव्यता से शिक्षण शिविर का आयोजन किया जायेगा।

-पारस जैन पार्श्वमणि

श्रद्धा से पाषाण में भी परमात्मा नजर आते हैं : स्वास्तिभूषण माताजी

केकड़ी (विश्व परिवार)। जब भक्ति की लहर आत्मा में उमड़ती है तो सब कुछ भूल जाते हैं बाह्य प्रक्रिया उसे बिल्कुल भी नजर नहीं आती है श्रद्धा से पाषाण में भी परमात्मा नजर आते हैं श्री कल्पतरु महामंडल विधान तीर्थंकर महावीर के अद्वितीय महिमा मंडल मंगल अर्घ्यो द्वारा पवित्र पूजा करने का एक मात्र उपाय है।

बोहरा कॉलोनी स्थित शिवम वाटिका में आचार्य श्री इंद्रनंदी जी महाराज ससंघ एवं आर्यिका स्वस्ति भूषण माता जी के सानिध्य एवं विधानाचार्य कपिल भैया के निर्देशन में मय संगीत एवं साज बाज के साथ चल रहे कल्पद्रुम महामंडल विधान के अंतर्गत विधान में चौबीस तीर्थकरों की स्तुति करने पर ऐसा लगता है की संपूर्ण जैन दर्शन की आत्मा का सुख अनुभव हो रहा है इस अवसर पर आर्यिका माताजी ने कहा कि एक-एक नाम के मंत्र का जाप करने से कर्मों के बंधन ढीले पड़ते हैं। प्रात: जिनाभिषेक एवं शांति धारा एवं समवशरण में विराजित चतुर्दिशा में विराजमान श्री जी का मुनि आर्यिका ससंघ के सानिध्य में संपन्न किए गए।

मीडिया प्रभारी रमेश बंसल ने बताया कि कल्पतरु महामंडल विधान के 800 अर्घ्य श्रीफल सहित श्री जी के समर्पित किए गए। समाज के अमरचंद चैरूका ने बताया कि मंगलवार को प्रात:आचार्य मुनि आर्यिका ससंघ के सानिध्य में कल्पतरु महामंडल विधान का समापन पूर्णाहुति एवं विश्व शांति कामना महायज्ञ संपन्न होगा। शाम को आरती भक्ति आनंद यात्रा सहित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम संपन्न हुई।

रेलवे स्टेशनों, रेल परिसरों में गंदगी फैलाने वालों पर कार्रवाई के साथ जनजागरूकता

स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध

रायपुर/ बिलासपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा स्वच्छता नियमों के उल्लंघन पर कार्रवाई के साथ जनजागरूकता की एक पहल शुरू की गई है। इसी कड़ी में जनवरी 2025 से मार्च 2025 के बीच रेलवे परिसरों में सार्वजनिक स्थानों पर थूकने और कूड़ा फैलाने जैसी असामाजिक गतिविधियों पर दंडात्मक कार्रवाई की गई है, जो न केवल जनस्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यावश्यक थी, बल्कि स्वच्छता की दिशा में एक सशक्त संदेश भी है।

तीन महीनों की इस अवधि में कुल 3,550 व्यक्तियों को सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने के लिए दंडित किया गया, जिससे कुल 3,77,730 रुपए की राजस्व वसूली हुई। इस पहल का प्रमुख उद्देश्य न केवल आर्थिक दंड के माध्यम से अनुशासन लागू करना है, बल्कि व्यापक स्तर पर नागरिकों में स्वच्छता के प्रति चेतना और जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करना भी है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे प्रशासन यह स्पष्ट करता है कि सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता में बाधा डालने वालो पर आगे भी इसी प्रकार की कार्रवाई की जाएगी। स्वच्छ भारत मिशन के तहत इस अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए रेलवे प्रशासन द्वारा जनजागरूकता अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें स्टेशन परिसरों में घोषणाएं, पोस्टर, डिजिटल डिस्प्ले और सोशल मीडिया के माध्यम से निरंतर अपील की जा रही है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे प्रशासन यात्रियों से अपील करता है कि वे अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाते हुए रेलवे परिसर को स्वच्छ बनाए रखने में सहयोग करें। यह न केवल एक सामाजिक दायित्व है, बल्कि यह प्रत्येक यात्री की स्वयं की सुविधा और स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। स्वच्छता केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक संस्कृति है जिसे हमें मिलकर अपनाना होगा।

यह अभियान दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की प्रतिबद्धता का प्रमाण है कि स्वच्छता के प्रति कोई भी लापरवाही अब स्वीकार्य नहीं होगी। भविष्य में भी इस प्रकार की निगरानी और कार्रवाई को और अधिक प्रभावी तरीके से जारी रखा जाएगा।

स्वच्छ परिसर, संरक्षित यात्रा यही हमारा लक्ष्य है और इसमें प्रत्येक नागरिक की भागीदारी अनिवार्य है।

सुशासन तिहार : नगर पालिका जामुल के तरूण सांस्कृतिक भवन में समाधान शिविर का आयोजन

जामुल (विश्व परिवार)। सुशासन तिहार 2025 के अंतर्गत नगर पालिका जामुल के तरूण सांस्कृतिक भवन में समाधान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें वार्ड क्र. 01, 02, 03, 04, 06 कुल पांच वार्डों के आवेदकों के समस्या का समाधान किया गया। सुशासन तिहार 2025 के प्रारंभमें 08 अप्रैल से 11 अप्रैल तक आम जनता से उनके प्राप्त आवेदन जिसमें मांग एवं शिकायतें थी उसे निराकृत किया गया। नगर पालिका से संबंधित 26 मांग 12 शिकायतें, राजस्व विभाग से 11 मांग, विद्युत विभाग से 03 मांग, स्वास्थ्य विभाग से 01 मांग सहित कुल 53 मांग शिकायत प्राप्त हुआ था। जिसमें जिला प्रशासन के उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में निराकृत किया गया। समाधान शिविर में महिला एवं बाल विकास, नगर तथा ग्राम निवेश विभाग, पर्यावरण विभाग, खाद्य विभाग, विद्युत विभाग, आयुष विभाग, लोक निर्माण विभाग, राजस्व विभाग, श्रम विभाग, शिक्षा विभाग, समाज कल्याण विभाग, आधार अपडेशन, स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे जिसमें 14 आवेदकों के आधार को अपडेट किया गया। 83 हितग्राहियों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया एवं 52 लोगों को आयुष विभाग द्वारा दवाई का वितरण किया गया। आयोजित शिविर में सफाई की समस्या का तत्काल मौके पर ही समाधान किया गया। समाधान शिविर में 24 नये आवेदन भी प्राप्त हुआ है। समाधान शिविर में अनुविभागीय अधिकारी महेश राजपूत, तहसीलदार पवन ठाकुर, मुख्य नगर पालिका अधिकारी सीमा बख्शी, नोडल अधिकारी सचिन भागवत सहित समस्त विभाग के अधिकारी कर्मचारी एवं आवेदक गण उपस्थित थे। अगला समाधान शिविर रावण भाठा जामुल में 09 मई को आयोजित होगा। जिसमें वार्ड क्र. 07, 09, 05, 10 कें समस्याओं का समाधान किया जायेगा।

रेड क्रॉस सेवा के साथ अपने अंदर की करूणा को प्रकट करें : कलेक्टर आदित्य सिंह

रेड क्रॉस सेवा सप्ताह में होंगे विभिन्न आयोजन : डॉ. दीपक मिश्रा

कलेक्टोरेट सभाकक्ष में रेडक्रास स्थापना दिवस कार्यक्रम किया तैयार

अशोकनगर (विश्व परिवार)। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी का सेवा का अपना इतिहास रहा है सेवा के साथ हमारे अंदर करूणा भाव का होना बहुत जरूरी है हम मनीविय पक्ष को देखे जहां जैसी जरूरत हो हम उसे पूरा करेंगे जैसा कि मुझे वाताया गया सभी साथी विभिन्न सेवा संस्थानो के माध्यम से अपना सर्वश्रेष्ठ करना चाहते हैं हम रेड क्रॉस के माध्यम से सेवा सप्ताह क्या पूरे वर्ष भर कार्य करें जहां मेरी जरूरत लगे हम उपल्ब्ध रहेंगे अभी अभी पिछले पखवाड़े में यहां ज्यान किया सेवा के क्षेत्र में रेड क्रॉस को कुछ अलग हटकर करना है इसमें आप सभी की मुख्य भूमिका होना चाहिए उक्त आश्य केउद्गार कलेक्ट्रेरेट सभागार में रेडक्रास सोसायटी की अध्यक्षता करते हुए कलेक्टर आदित्य सिंह ने व्यक्त किए।

कलेक्टर महोदय रेडक्रास से परिचय के साथ किया सम्मान- इसके पहले रेडक्रास सोसायटी के चेयरमैन डॉ दीपक मिश्रा ने रेडक्रास कार्यकारिणी का परिचय कराया इसके बाद जिलाधीश महोदय श्रीमान आदित्य सिंह का स्वागत सम्मान किया गया बैठक में चेयरमेन दीपक मिश्रा द्वारा सभी सदस्यों का परिचय कराया गया जिलाधीश महोदय कासम्मान सोसाइटी के प्रदेश प्रतिनिधि डॉक्टर जय मंडल सिंह यादव, संजय रघुवंशी, राजीव जाट, वाइस चेयरमैन डां हरवीर रघुवंशी कोषाध्यक्ष विपिन सिघंई नारायण प्रसाद शर्मा हरबंस जुनेजा विजय जैन धुर्र दिनेश जैन रामकुमार चौधरी विकास जैन बल्ली वेदराम लोधी अशोक जी शर्मा महेश जी शर्मा बालचंद जी नरवरिया डॉ राजकुमार शर्मा डॉक्टर आनंद मोहन दुबे रामकुमार ओझा आदि प्रमुख उपस्थित जनों ने स्मृति चिन्ह पट्टिका एवं माला द्वारा सभी ने सम्मान किया।

युवाओ को जोड़ने का अभियान चलाया जाएगा- विजय धुर्रा ने कहा कि रेडक्रास सोसायटी सेवा सप्ताह में विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम से सेवाए देगी राजीव निर्भीक ने कहा कि हम ऐसे कार्यक्रम वना ये जिससे युवा जुड़ सके और संगठन की युवा इकाई को मजबूत किया जाये डॉ जय मंडल यादव ने कहा कि सर सभी समाजसेवी इस संस्था से जुड़कर अपनी सेवाएं दे रहे हैं प्रत्येक व्यक्ति की सेवा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान व उपस्थिति है विपिन सिंघई ने कहा कि आज कल वाहन दुर्घटनाओ को देखते हुए वाहनो के परिचालन में सावधानी के प्रति जागरूक करना की आवश्यकता है।

समाज सेवा के लिए रेडक्रास सोसायटी अनुकरणीय- जिलाधीश महोदय ने कहा कि समाज सेवा के लिए रेड क्रॉस सोसाइटी के कार्य अनुकरणीय हैं सभी समाज के सहयोग से रेड क्रॉस को मजबूत बनाएंगे समाज सेवकों का सहयोग करेंगे और सभी कार्यक्रम रेड क्रॉस सप्ताह के तो कार्यक्रम करने है इसी के साथ वर्ष भर कार्यक्रम तय करना है सभी समाजों को समरसता के साथ जोड़कर समाज सेवा के लिए नया आयाम देंगे रेड क्रॉस सोसाइटी के सचिव डॉक्टर डी के भार्गव द्वारा रेड क्रॉस सप्ताह में होने वाले कार्यक्रम की रुपरेखा रखी गई।

शासकीय अस्पताल में सफाई से होगी शुरुआत- चेयरमैन डॉ. दीपक मिश्रा ने सेवा सप्ताह के कार्यक्रम बताया गया जिसमें 8 मई को शासकीय अस्पताल के आसपास सफाई अभियान होगा जो सुबह 7 से 9 तक रहेगा, 9 मई को सुबह 9 वृद्धि आश्रम में स्वास्थ्य शिविर एवं वृद्धो को फल वितरण किया जाएंगे, 10 में को यातायात सुरक्षा के तहत मंडी कृषि मंडी में ट्राली में रेडियम पट्टी लगाई जाएगी, 11 में को शासकीय अस्पताल में नेत्र परीक्षण शिविर लगाया जाएगा, 12 में को नशा मुक्ति स्वच्छता रैली निकाली जाएगी, 13 में को गोराघाट आदिवासी बस्ती में स्वास्थ्य सेवा शिविर जिसमें गर्भवती किशोरी बालिकाओं की जांच की जाएगी, 14 में को पॉलिटेक्निक ने कॉलेज में सुबह 11बजे रक्तदान शिविर होगा शाम 4:00 बजे समापन कार्यक्रम होगा जिसमें विशेष प्रतिभाओं का सम्मान किया जाएगा। **-विजय धुर्रा**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर बुधवार 07 मई 2025

संक्षिप्त समाचार

जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता सम्पन्न

बलरामपुर(विश्व परिवार)। जिला ग्रंथालय भवन बलरामपुर में आज जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता संपन्न हुई इस प्रतियोगिता का आयोजन बेमेतरा में होने वाली राज्य स्तरीय सब जूनियर शतरंज प्रतियोगिता के लिए अण्डर 09/11/13 आयु वर्गो के खिलाडियों के चयन को ध्यान में रखकर की गयी। साथ ही ओपन वर्ग की भी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में सरगुजा संभाग के विभिन्न जिलों के 45 खिलाड़ियो ने भाग लिया इस प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे ओपन वर्ग -शेष रतन जायसवाल विजेता, रोहन गुप्ता उप विजेता, पार्थ गुप्ता तृतीय। 19 आयु वर्ग - स्नेहा गुप्ता विजेता, सुरभि राय उप विजेता। ह्व -15 आयु वर्ग - अमन सिंह विजेता, सानिध्य गुप्ता उप विजेता। ह्व-13 आयु वर्ग अनन्या रे विजेता, श्रेया शिल्पी उप विजेता। ह्व- 11 आर्यन राज डांगरे विजेता, अरूप रे उप विजेता। ह्व-9 आयु वर्ग अक्षत राज डांगरे विजेता, आर्यम गुप्ता उप विजेता रहे। कशिश सिन्हा प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी रहीं । जुनियर खिलाड़ियों सहज सिंह, न्यासा सिंह और परिधि गुप्ता को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार स्वरूप शतरंज सेट प्रदान किया गया।प्रतियोगिता संपन्न होने के पश्चात समापन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में लोधी राम एक्का नगर पालिका अध्यक्ष और विशिष्ट अतिथि के रुप में सीईओ जनपद पंचायत रणवीर साय, सीएमओ प्रणव राय, नगर पालिका उपाध्यक्ष दिलीप सोनी छठ पूजा समिति के अध्यक्ष मनीष सिंह पम्मू, साथ ही छ.ग. प्रदेश शतरंज संघ के सह सचिव सरोज वैष्णव, संभाग के कन्वेनर विश्वनाथ मनियन, नेशनल इस्ट्रक्टर शेष रतन जायसवाल उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भानुप्रकाश दीक्षित ने की। प्रतियोगिता के मुख्य निर्णायक प्रदीप मण्डल (सीनियर नेशनल आर्बिटर) और सह निर्णायक रविशंकर गुप्ता थे। विजेता खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार ट्रॉफी एवं श्रीराम कम्प्यूटर्स की ओर से होम थिएटर देकर सम्मानित किया गया। सरगुजा संभाग के कन्वेनर विश्वनाथ मनियन को शतरंज के प्रति उनके योगदान के लिए शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता आयोजन में पार्षद गौतम सिंह, पार्षद अमित गुप्ता मण्टू ,पार्षद राकेश सिंह मिंटू, अंजूम अंसारी, मंगलम पाण्डेय, अंश सिंह, विशाल सोनी, रीतिक सिंह, आकाश चौबे, अभिषेक जायसवाल, राघवेन्द्र सिंह, साकेत सिंह का सक्रिय सहयोग रहा। इस कार्यक्रम में मुख्य रुप से छोटे लाल गुप्ता, पुष्पेन्द्र सिंह बिट्टू, हरकेश गुप्ता, कुंदन गुप्ता आदि नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

सुशासन तिहार में लोगों को मिल रहा फायदा

धमतरी(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री साय के शासन में आम जनता के समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए सुशासन तिहार संचालित की जा रही है। सुशासन तिहार के माध्यम से जिले के नगरी विकासखंड के ग्राम पंचायत बेलगांव में राशि -20 लाख रुपए एवं गट्टासिल्ली में राशि -30 लाख रुपए मध्य क्षेत्र आदिवासी विकास प्राधिकरण द्वारा जिला पंचायत अध्यक्ष श्री अरुण कुमार सार्वा के प्रयास से ग्रामीणों की मांग पर तत्काल सामुदायिक भवन स्वीकृत किया गया। जिला पंचायत धमतरी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुश्री रोमा श्रीवास्तव ने बताया कि मध्य क्षेत्र आदिवासी विकास प्राधिकरण द्वारा स्वीकृत सामुदायिक भवन के बन जाने से पंचायत से संबंधित कार्यक्रम, सामाजिक बैठकों सहित विभिन्न कार्यक्रम में सुविधा होगी। ग्रामीणों की मांग पर सुशासन तिहार में सामुदायिक भवन स्वीकृत किया गया है। इसके लिए बेलरगांव एवं गट्टासिल्ली वासियों ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का आभार जताया।

जमीन से सम्बंधित प्रकरणों के त्वरित निराकरण हेतु राजस्व और पुलिस की माह में एक बार जरूर हो संयुक्त बैठक-कलेक्टर हरिस एस

राजस्व के लम्बित प्रकरणों के निराकरण में लाए तेजी

कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था तथा राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर ने दिए निर्देश

जगदलपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री हरिस एस ने कहा कि जमीन से संबंधित प्रकरणों के निराकरण हेतु राजस्व व पुलिस विभाग के अधिकारी माह में एक बार जरूर संयुक्त बैठक करें। इस बैठक के माध्यम से सम्पत्ति से संबंधित प्रकरणों का त्वरित निराकरण की पहल की जाए। समाज के संवेदनशील मामलों में बदमाश लोगों का चिन्हांकन कर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही भी करें। इसके लिए गांव के कोटवार व जनप्रतिनिधियों से लगातार संवाद बनाए रखें और ग्रामीण क्षेत्रों का लगातार भ्रमण करें। कलेक्टर श्री हरिस एस और पुलिस अधीक्षक श्री शलभ सिंहा मंगलवार को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था के बैठक लिए।

कलेक्टर ने कहा कि स्लैरी पाइप लाइन विस्तार के मामलों को राजस्व अधिकारी लीड लेकर काम को जल्द करवाएं। चलित थाना का आयोजन संवेदनशील क्षेत्रों में भी करवाएं जिसमें राजस्व अधिकारी की उपस्थिति भी हो। गांव के कोटवार-पटेल का राजस्व अधिकारी माहवार बैठक ले ताकि गांव की स्थिति, समस्या-मांग की जानकारी लगातार मिल सके। सुशासन तिहार के तहत समाधान शिविर का भी आयोजन सभी ब्लॉकों में किया जा रहा है इसमें आवश्यक सुरक्षा व्यवस्था की जाने के भी निर्देश दिए । बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री सिंहा ने कहा कि ट्रैफ्फिक व्यवस्था हेतु अनुभाग स्तर पर भी जांच करें, दुर्घटनाजन्य स्थलों में सुधार की आवश्यकता का आंकलन कर रिपोर्ट तैयार जानकारी दें। नो पार्किंग में खडे गाड़ियों का आवश्यक चालानी कार्यवाही करें। रात में ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर नियंत्रण और डीजे वालों पर आवश्यक कार्यवाही करें। साथ ही सार्वजनिक स्थलों पर शराब सेवन करने वालों पर कार्यवाही करें। इसके अलावा अन्य देशों के नागरिकों या अप्रवासी लोगों की पहचान करने के लिए संयुक्त कार्यवाही करें। बैठक में कलेक्टर ने मुख्य सचिव द्वारा कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था के संबंध दिए निर्देश की भी चर्चा किए। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री सी पी बघेल, अति. पुलिस अधीक्षक श्री महेश्वर नाग, आईपीएस श्री आकाश श्रीश्रीमाल सहित राजस्व और पुलिस विभाग के अधिकारी भी उपस्थित रहे। राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर श्री हरिस ने कहा कि राजस्व अधिकारी अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहते हुए, राजस्व प्रकरणों का निराकरण करने में तत्परता दिखाएं। बैठक में राजस्व प्रकरणों के दर्ज, निराकरण एवं लंबित प्रकरणों, ई-कोर्ट के प्रकरणों, स्वामित्व योजना का क्रियान्वयन, नक्शा बटांकन की प्रगति, भू-अर्जन के प्रकरण, स्लरी पाइप लाइन विस्तार के तहत भुगतान के प्रकरण, अविवादित नामांतरण, अविवादित खाता विभाजन, विवादित खाता विभाजन, सीमांकन के प्रकरण, राजस्व न्यायालयवार लंबित प्रकरणों, भू-अभिलेख पर त्रुटि सुधार के मामलें, आर बी सी 6-4 के प्रकरणों के निराकरण की स्थिति और भुगतान की समीक्षा की गई। इसके अलावा शीर्ष बी-121 विविध सामान्य राजस्व प्रकरण, अनाधिकृत रूप से भूमि पर कब्जा करने या रखने वाले व्यक्तियों की बेदखली और उन पर शास्ति की कार्रवाई, अ -74 के मामले, दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 170,126,135 के प्रकरण, वनाधिकार पट्टे का डिजिटाइजेशन एवं अभिलेख दुरुस्ती व्यवस्था की जानकारी, अनुविभागीय व तहसील कार्यालय के निर्माण कार्यों की प्रगति और आवश्यक संसाधनों, असर्वेक्षित गांवों के राजस्व सर्वेक्षण की प्रगति, नक्शा नवीनीकरण की प्रगति, बैंक बंधक के प्रकरण, डिजिटल हस्ताक्षरिकृत खसरों की प्रगति, राजस्व शिविर की क्रियान्वयन एवं आवेदनों पर कार्यवाही की समीक्षा किया गया।

एक देश, एक चुनाव विषय पर लोहण्डीगुड़ा में आयोजित हुआ विधानसभा स्तरीय जनजागरूकता कार्यक्रम विधायक गोयल

जगदलपुर (विश्व परिवार)। आज लोहण्डीगुड़ा मण्डल के ग्राम पंचायत लोहण्डीगुड़ा (बाजार स्थल) में वन नेशन, वन इलेक्शन (एक देश, एक चुनाव) विषय पर एक महत्वपूर्ण विधानसभा स्तरीय जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम देश के लोकतांत्रिक व्यवस्था को अधिक मजबूत, पारदर्शी और समयबद्ध बनाने की दिशा में एक अहम पहल माना जा रहा है। कार्यक्रम में चित्रकोट विधायक माननीय श्री विनायक गोयल जी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का 'एक देश, एक चुनाव' का विचार न केवल चुनावी प्रक्रिया को सरल बनाएगा, बल्कि इससे समय, धन और संसाधनों की बचत भी होगी। यह लोकतंत्र को और अधिक प्रभावी, मजबूत और संगठित बनाएगा। मोदी जी की सरकार सदैव 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की भावना से काम कर रही है, और यह पहल उसी दिशा में एक निर्णायक कदम है। कार्यक्रम का उद्देश्य आम जनता को वन नेशन, वन इलेक्शन की संकल्पना से अवगत कराना और इससे जुड़े लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी देना था।

बस्तर सांसद महेश कश्यप जी ने बताया कि बार-बार होने वाले चुनावों से विकास कार्यों में रुकावट आती है। एक साथ चुनाव कराने से न केवल नीति-निर्माण में निरंतरता आएगी, बल्कि प्रशासनिक मशीनरी का अधिकतम उपयोग भी सुनिश्चित होगा। कार्यक्रम के अंत में सभी ने एक देश, एक चुनाव के समर्थन में एकमत होकर सरकार की इस पहल को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

इस कार्यक्रम में इस अवसर पर बस्तर सांसद महेश कश्यप जी, चित्रकोट विधायक विनायक गोयल जी, जिला अध्यक्ष वेद प्रकाश पाण्डेय जी, पूर्व विधायक लच्छूराम कश्यप जी, बैदूराम कश्यप जी, जिला उपाध्यक्ष योगेन्द्र पाण्डेय जी, जिला मंत्री नरसिंह राव जी, बाबुल नाग जी, रजनीश पानीग्राही, जिला पंचायत उपाध्यक्ष बलदेव मण्डावी जी, जिला पंचायत सदस्य चन्द्रभान कश्यप जी, कामदेव बघेल, सुश्री पदमनी कश्यप जी, जनपद अध्यक्ष श्रीमती पदमनी कश्यप, श्रीमती रामबती भण्डारी, श्रीमती महावती मंडावी, श्रीमती मानकदेई कश्यप, जनपद उपाध्यक्ष बसंत कश्यप जी, जनपद सदस्य श्रीमती शांति नाग, मण्डल अध्यक्ष मंगतुराम कश्यप जी, सोमारू राम कश्यप जी, देवी प्रसाद वेंजाम जी, सुनील कुहरामी जी, पूर्व मण्डल अध्यक्ष नरसिंह ठाकुर जी, नारायण ठाकुर जी, पूर्व जिला पंचायत सदस्य रैतुराम बघेल जी, बुधराम बघेल, गुनु ठाकुर, तुलसी ठाकुर, घनश्याम ठाकुर, ओमप्रकाश ठाकुर।

सुशासन तिहार से जनता की समस्या का हो रहा त्वरित समाधान

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत नीरा बाई का हुआ सपना साकार

धमतरी(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ सरकार की सुशासन तिहार-2025 पहल आम जनता की समस्याओं के त्वरित समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो रही है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की नेतृत्व में चल रही इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में योजनाओं का लाभ तेजी से पहुंच रहा है। इस संबंध में जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुश्री रोमा श्रीवास्तव ने बताया कि जिले के विकासखण्ड के ग्राम गातापार निवासी नीरा बाई साहू इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। उन्होंने 14 अप्रैल 2025 को प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत अपना आवेदन सुशासन तिहार शिविर में प्रस्तुत किया था। शासन की तत्परता का परिचय देते हुए संबंधित विभाग द्वारा श्24श् अप्रैल को उनके घर का आवास प्लस सर्वेक्षण किया गया और महज दो दिन बाद 26 अप्रैल को उनकी समस्या का निराकरण कर दिया गया। नीरा बाई साहू की समस्या का समाधान होने पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा शुरू की गई इस पहल को सराहनीय बताया। इससे न सिर्फहमें सरकार से जोड़ने का काम किया है, बल्कि नीरा बाई का पक्का मकान पाने का सपना अब साकार होने जा रहा है। सुशासन तिहार-2025 का उद्देश्य शासन को पारदर्शी बनाना, जनकल्याणकारी योजनाओं को धरातल पर लाना और आम जनता की समस्याओं का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करना है।

कटेकल्याण क्षेत्र में चल रहे निर्माण कार्यों का कलेक्टर कुणाल दुदावत ने किया निरीक्षण

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री कुणाल दुदावत ने आज जनपद पंचायत कटेकल्याण के विभिन्न विकास कार्यों का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण अभियान में स्वास्थ्य केंद्र, स्टेडियम, जिम, पुस्तकालय, कॉलेज भवन, बाजार तथा सोलर स्ट्रीट लाइट्स जैसी आधारभूत सुविधाएं शामिल रहीं। निरीक्षण की शुरुआत कटेकल्याण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से हुई, जहां कलेक्टर ने मरीजों से संवाद किया और अस्पताल में पाई गई अव्यवस्थाओं को तुरंत सुधारने के निर्देश दिए। साथ ही उपस्थित नहीं रहने वाले कर्मचारियों को भी तलब कर कार्य के प्रति सजग रहने की हिदायत दी गई। इसके उपरांत उनके द्वारा परचेली स्टेडियम में नवनिर्मित जिम व पुस्तकालय का जायजा लिया गया। यहां उन्होंने जिम में नियमित संचालन हेतु पंचायत द्वारा प्रशिक्षित इंस्ट्रक्टर की नियुक्ति के निर्देश दिए गए। साथ ही उनके द्वारा पुस्तकालय भवन को हालिया तेज तूफान से हुई क्षति की मरम्मत शीघ्र कराने को कहा गया। इसके साथ ही उन्होंने तुमकपाल में निर्माणाधीन सीएचसी और कॉलेज भवन का निरीक्षण करते हुए जून 2025 तक कार्य पूर्ण करने की समय-सीमा तय की गई। इसके उपरांत कलेक्टर श्री दुदावत ने कटेकल्याण बाजार का भी दौरा कर मॉडल बाजार के रूप में विकास हेतु सफाई और सुव्यवस्था पर जोर दिया। साथ ही विद्युत विभाग व क्रेडा द्वारा लगाए जा रहे सौर स्ट्रीट लाइट्स की प्रगति की समीक्षा

सुशासन तिहार में तेजराम और महेन्द्र को मिली नई ऋण पुस्तिका एवं खेमराज को किसान किताब

महासमुंद(विश्व परिवार)। सुशासन तिहार के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के त्वरित समाधान हेतु प्रशासन द्वारा प्रभावी पहल की जा रही है। इसी कड़ी में उपतहसील भंवरपुर के ग्राम खोगसा निवासी कृषक तेजराम एवं महेन्द्र ने अपनी पुरानी एवं जीर्ण-शीर्ण ऋण पुस्तिकाओं के स्थान पर द्वितीय प्रति की मांग को लेकर आवेदन प्रस्तुत किया था। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह के मार्गदर्शन में राजस्व अधिकारियों द्वारा किसानों की इस आवश्यकता को गंभीरता से लेते हुए शीघ्र कार्यवाही की गई, जिसके फलस्वरूप दोनों कृषकों को उपतहसील कार्यालय में उनकी नई ऋण पुस्तिकाएं प्रदान की गईं। इसी प्रकार तहसील कोमाखान के ग्राम बकमा निवासी कृषक

खेमराज पिता नारायण पटेल ने भी सुशासन तिहार के दौरान किसान किताब के लिए आवेदन किया था। राजस्व अधिकारी द्वारा उनके आवेदन का प्राथमिकता से निराकरण करते हुए आवश्यक प्रक्रियाएं पूर्ण की गईं और उन्हें उनकी किसान किताब प्रदान की गई। इस दस्तावेज से उन्हें अब भूमि संबंधी जानकारी, ऋण प्रक्रिया, कृषि योजनाओं में सहभागिता तथा विभिन्न सरकारी सुविधाओं का लाभ लेने में सुविधा प्राप्त होगी।

शासन प्रशासन लगातार जनकल्याणकारी योजनाओं का कर रही क्रियान्वयन-विधायक किरण देव

सुशासन तिहार 2025 : जगदलपुर विकासखण्ड के ग्राम पंचायत तितिरगांव में आयोजित समाधान शिविर

समाधान शिविर में मिला विभिन्न हितग्राहियों को प्रमाण पत्र और कार्ड

जगदलपुर (विश्व परिवार)। विकासखंड जगदलपुर के तहत ग्राम पंचायत तितिरगांव में सुशासन तिहार 2025 के तहत समाधान शिविर का आयोजन किया गया। समाधान शिविर के मुख्य अतिथि के रूप में विधायक श्री किरण देव उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक श्री किरणदेव ने कहा कि शासन प्रशासन लगातार जनकल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन कर रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की मंशानुसार अपन मन के सरकार, हमर द्वार के तहत सुशासन तिहार के माध्यम से सरकार-प्रशासन ग्राम पंचायतों और ग्रामों में समस्या तथा मांग को आवेदन के माध्यम से लिया अब समाधान शिविर के द्वारा आवेदनों की निराकरण की जानकारी दी जा रही है। लगभग एक लाख 88 हजार से अधिक आवेदन पूरे जिले में मिले जिसमें 85 प्रतिशत आवेदनों का निराकरण हमारे विभिन्न विभागों के द्वारा किया गया। तत्परता से आवेदनों का निराकरण के लिए सभी विभाग को बधाई, साथ ही उन्होंने कहा कि जो मांग शासन स्तर से होना उसके निराकरण में समय लगेगा। जिले में मिले आवेदनों में सर्वाधिक मांग प्रधानमंत्री आवास योजना की रही, जनता के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी

की मंशा है कि हर पात्र हितग्राही को आवास योजना का लाभ मिले। आवेदनों के निराकरण में पात्र हितग्राही न छुटे इसके लिए क्षेत्र के जनप्रतिनिधि और सरपंच भी ध्यान रखें। विधायक श्री देव ने तितिरगांव के पहुंच मार्ग के लिए विकास हेतु प्रस्ताव की बात कही साथ ही बालिकोंटा स्वास्थ्य केंद्र में मानव संसाधन बढ़ाने भी कहा। कार्यक्रम को जगदलपुर जनपद पंचायत के अध्यक्ष श्री पदलाम नाग ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम में विधायक श्री देव ने विभागों द्वारा लगाए स्टॉल का निरीक्षण कर सभी से योजनाओं के लिए मिले आवेदनों की स्थिति का संज्ञान लिया, साथ ही स्वास्थ्य विभाग के स्टॉल में अपना स्वास्थ्य जांच भी करवाया। कार्यक्रम से पहले कमिश्नर श्री डोमन सिंह, कलेक्टर श्री हरिस एस, सीईओ जिला पंचायत श्री प्रतीक जैन ने भी विभागीय स्टालों का निरीक्षण कर आवेदनों के स्वरूप और निराकरण की स्थिति का जायजा लिया। इस अवसर पर कार्यक्रम में जनपद जगदलपुर के उपाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम कश्यप सहित 10 पंचायत के सरपंच, जिला नोडल, सहायक नोडल, जनपद पंचायत के सीईओ सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सीईओ श्री प्रतीक जैन ने बताया कि तितरगांव शिविर से संबंधित 13 पंचायत क्षेत्र से 6599 आवेदन प्राप्त हुए थे। जिसमें 6530 का निराकरण किया गया है। इस तितिरगांव समाधान शिविर में तितिरगांव,कालीपुर, बालिकोंटा, आसना, तामाकोनी, घाटपदमुर,बिरिंगपाल, कुम्हरावंड, पल्ली,परपा, पंडरीपानी और मावलीगुड़ा ग्राम पंचायत को शामिल किया गया था।

तितिर गांव के हाई स्कूल मैदान में आयोजित शिविर में विभागों के अधिकारियों ने विभागीय योजनाओं की जानकारी दी और सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदनों के निराकरण की जानकारी दी गई तथा लंबित आवेदनों की स्थिति की जानकारी दी गई। शिविर में सुशासन तिहार के तहत आवेदन करने वालों में आसना निवासी गोमती नाग को स्थाई सामाजिक प्रस्तुति प्रमाण बनाकर दिया । इसी प्रकार वन अधिकार पट्टा के लिए आवेदन करने वाले भक्कू राम को .06 रकबा का पट्टा तैयार कर दिया गया। सुशासन तिहार में तितरगांव के निवासी सुरेन्द्र कुमार बघेल ने राजस्व विभाग को सीमांकन के लिए आवेदन किया था जिसका विभाग के मैदानी अमलों के द्वारा आवेदनकर्ता सुरेन्द्र बघेल के जमीन का सीमांकन किया गया। विनोद कुमार सरोद ने सुशासन तिहार में आवेदन के माध्यम से श्रमिक कार्ड बनाने की मांग की थी जिसे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के हाथों दिलवाया गया। सुशासन तिहार में लर्निंग लाइसेंस बनाने के लिए लक्ष्मण मौर्य, कृष्णा बघेल, नीलू कश्यप और रमेश कश्यप ने आवेदन किया था। परिवहन विभाग के द्वारा शिविर आयोजित कर ड्राईविंग टेस्ट लिया। तितिरगांव में आयोजित शिविर में उक्त चारों को लर्निंग लाइसेंस प्रदान किया गया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर बुधवार 07 मई 2025

व्यापार समाचार

सरकारी खनन कंपनी का रिकॉर्ड प्रदर्शन अप्रैल में उत्पादन 15 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली(एजेंसी)। सरकारी खनन कंपनी एनएमडीसी ने अप्रैल में रिकॉर्ड उत्पादन किया है और उसके लौह अयस्क उत्पादन में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। वहीं, बिक्री में 3 प्रतिशत का इजाफा दर्ज किया गया है। एनएमडीसी ने बयान में कहा कि कंपनी ने अप्रैल में 4 मिलियन टन (एमएनटी) लौह अयस्क का उत्पादन किया है, जो कि पिछले साल समान अवधि के आंकड़े 3.48 एमएनटी से 15 प्रतिशत अधिक है। इसके साथ ही बीते महीने एनएमडीसी की लौह अयस्क की बिक्री 3.63 एमएनटी रही है, जो कि अप्रैल 2024 की 3.53 एमएनटी की बिक्री से 3 प्रतिशत अधिक है। कंपनी का पेलेट उत्पादन 0.23 लाख टन के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया, जो 2018 में अप्रैल के पिछले रिकॉर्ड को पार कर गया। कंपनी के शानदार प्रदर्शन पर एनएमडीसी के सीएमडी अमिताभ मुखर्जी ने कहा, अप्रैल में हमारा रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन, साथ ही हमारी प्रमुख लौह अयस्क खदानों किरंदुल, बचेली और दोणिमलाई से पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में क्रमश: 12 प्रतिशत, 4 प्रतिशत और 88 प्रतिशत की वृद्धि ने हमारी अग्रणी स्थिति को मजबूत किया है और 2030 तक 100 मीट्रिक टन खनन कंपनी बनने के हमारे महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया है। स्टील मंत्रालय के तहत आने वाली एनएमडीसी भारत की सबसे बड़ी लौह अयस्क उत्पादक कंपनी है। लौह अयस्क एक महत्वपूर्ण खनिज होता है और इसका इस्तेमाल मुख्य रूप से स्टील बनाने में किया जाता है और इसे दुनियाभर में स्टील के उत्पादन का आधार माना जाता है। इसके अतिरिक्त, एनएमडीसी से अलग हुई कंपनी एनएमडीसी स्टील लिमिटेड (एनएसएल) ने कहा कि अप्रैल में कंपनी के हॉट मेटल उत्पादन में 8.5 प्रतिशत की मासिक वृद्धि दर्ज की है और उत्पादन बढ़कर 2,30,111 टन हो गया है जो मार्च में 2,11,978 टन था।

भारतीय शेयर बाजार तेजी के साथ खुला, अदाणी पोर्ट्स टॉप गेनर

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार सोमवार को तेजी के साथ खुला। बाजार में चौतरफा तेजी देखी जा रही है। सुबह 9ः36 पर सेंसेक्स 276 अंक या 0.34 प्रतिशत की बढ़त के साथ 80,741 और निफ्टी 78 अंक या 0.32 प्रतिशत की तेजी के साथ 24,425 पर था। सेंसेक्स को अदाणी पोर्ट्स, एशियन पेंट्स, टाइटन और टाटा मोटर्स जैसे शेयर ऊपर खींचने का काम कर रहे हैं। लार्जकैप के साथ मिडकैप और स्मॉलकैप में भी खरीदारी का ट्रेंड देखा जा रहा है। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 344 अंक या 0.64 प्रतिशत की बढ़त के साथ 54,050 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 24 अंक की मजबूती के साथ 16,466 पर था। चॉइस ब्रोकिंग के डेरिवेटिव विश्लेषक हार्दिक मटालिया ने कहा, सकारात्मक शुरुआत के बाद निफ्टी को 24,300, 24,200 और 24,000 पर सपोर्ट मिल सकता है। ऊपरी स्तर पर 24,500 एक रुकावट हो सकता है। अगर यह टूटता है तो 24,600 और 24,800 के स्तर देखने को मिल सकते हैं। सेक्टोरल आधार पर ऑटो, आईटी, फार्मा, एफएमसीजी, मेटल और एनर्जी सबसे ज्यादा बढ़ने वाले इंडेक्स हैं। पीएसयू बैंक, फाइनेंशियल सर्विसेज और रियल्टी इंडेक्स में कमजोरी बनी हुई है। सेंसेक्स में अदाणी पोर्ट्स, एशियन पेंट्स, टाइटन, बजाज फिनसर्व, एमएंडएम, पावर ग्रिड, एचसीएल टेक, टाटा मोटर्स, टीसीएस, इंफोसिस, एचडीएफसी बैंक और आईटीसी टॉप गेनर्स थे। कोटक महिंद्रा बैंक, एसबीआई, एलएंडटी और इंडसइंड बैंक टॉप लूजर्स थे। एशिया में टोक्यो, शंघाई, हांगकांग और सियोल समेत प्रमुख क्षेत्रीय बाजार अपने-अपने सार्वजनिक अवकाश के कारण बंद हैं, जबकि ऑस्ट्रेलियाई बाजार लाल निशान में थे। शुक्रवार को अमेरिकी बाजार बढ़त के साथ बंद हुआ। सत्र के दौरान टेक्नोलॉजी नैस्डैक में 1.51 प्रतिशत की तेजी आई। विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) लगातार 12वें सत्र में 2 मई को शुद्ध खरीदार बने रहे और उन्होंने 2,769 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने भी 3,290 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।

रेमेडियम लाइफकेयर राइट्स इश्यू को सकारात्मक प्रतिभाव : पहले दो दिनों में 26 प्रतिशत सब्सक्राइब

रायपुर। रेमेडियम लाइफकेयर लिमिटेड का राइट्स इश्यू कंपनी की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण माइल स्टोन है। इस इश्यू को निवेशकों और शेयरधारकों से जबरदस्त समर्थन मिल रहा है और दूसरे दिन के अंत तक इसे 26.03 प्रतिशत सब्सक्रिप्शन प्राप्त हुआ है। विशेष रूप से, रेमेडियम लाइफकेयर एक तेजी से बढ़ती कंपनी है जो फार्मास्युटिकल उद्योग के लिए आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के हिस्से के रूप में कच्चे माल के व्यापार और वितरण में विशेषज्ञता रखती है। इस इश्यू के माध्यम से जुटाई गई धनराशि का उपयोग रणनीतिक रूप से वैश्विक विस्तार पहलों में तेजी लाने, प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कंपनी के पदचिह्न को मजबूत करने और कार्यशील पूंजी को मजबूत करने और अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं में निवेश करने के लिए किया जाएगा। इससे कंपनी की समग्र वित्तीय स्थिति में सुधार होगा। अपनी बैलेंस शीट को मजबूत करके और परिचालन क्षमताओं को बढ़ाकर, रेमेडियल लाइफकेयर का लक्ष्य अपने निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण दीर्घकालिक मूल्य हासिल करना है। इसके अलावा, इसका लक्ष्य खुद को वैश्विक विशेष रसायन और फार्मास्युटिकल क्षेत्र में एक अग्रणी कंपनी के रूप में स्थापित करना भी है। रेमेडियम लाइफकेयर लिमिटेड के पूर्णकालिक निदेशक आदर्श मुंजाल ने कहा कि इस कदम से कंपनी की वित्तीय स्थिति में सुधार होगा और महत्वपूर्ण वृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त होगा। हमारा ध्यान विश्व स्तर पर अपनी उपस्थिति का विस्तार करने और व्यापक बाजार की सेवा के लिए अनुसंधान और विनिर्माण में आगे बढ़ने पर है। यह दृष्टिकोण हमारी दीर्घकालिक स्थिरता और सफलता सुनिश्चित करेगा। यह रणनीतिक बदलाव कंपनी की हालिया उपलब्धि के बाद आया है, जिसमें कंपनी को फरवरी-2025 में यूके स्थित एक प्रमुख फार्मास्युटिकल वितरक से ?182.7 करोड़ का बहु-वर्षीय निर्यात ऑर्डर मिला था। यह ऑर्डर रेमेडी को संक्रमण-रोधी, कार्डियोवस्कुलर और सीएनएस चिकित्सीय क्षेत्रों में फार्मास्युटिकल इंटरमीडिएट्स के एक विश्वसनीय वैश्विक आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थान देता है।

पंजाब ने लखनऊ को 37 रनों से हराया

प्रभसिमरन और अर्शदीप ने किया धमाकेदार प्रदर्शन

धर्मशाला(एजेंसी)। पंजाब किंग्स ने लखनऊ सुपर जायंट्स को आईपीएल 2025 का 54वां में 37 रनों से हरा दिया है. धर्मशाला के हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह का जलवा देखने के लिए मिला.अर्शदीप ने नई गेंद के साथ शानदार प्रदर्शन किया, स्विंग और बाउंस के साथ लखनऊ सुपर जायंट्स के शीर्ष क्रम को ध्वस्त कर दिया. इस जीत के साथ पंजाब किंग्स अंक तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है. इस मैच में प्रभसिमरन सिंह के शानदार 91 रन की बदौलत पीबीकेएस ने 236/5 का विशाल स्कोर बनाया जिसके बाद अर्शदीप ने पावरप्ले के अंदर एडेन मार्कराम, मिशेल मार्श और निकोलस पूरन को आउट कर मैच को पीबीकेएस के पक्ष में कर दिया. लखनऊ के लिए आयुष बदोनी ने 40 गेंदों पर 5 चौके और 5 छक्कों के साथ 74 रन और अब्दुल समद ने 24 बॉल में 2 चौके और 4 छक्कों के साथ छठे विकेट के लिए 81 रन की साझेदारी की लेकिन एलएसजी 20 ओवर में 199/7 बना पाई और 37 रनों से मैच हार गई. लखनऊ के लिए कप्तान ऋषभ पंत ने 17 गेंदों पर 18 रन की पारी में तीन चौके लगाए. अजमतुल्लाह उमरजई ने उन्हें आठवें ओवर में गेंद को डीप कवर ने आसानी से कैच कर लिया. डेविड मिलर के रूप में उमरजई को अपना दूसरा विकेट मिला. पंजाब के लिए अर्शदीप सिंह ने 4 ओवर में 16 रन देकर 3 विकेट लिए और अज़मतुल्लाह उमरज़ई ने 2 विकेट चटकाए. इससे पहले पंजाब के लिए प्रभसिमरन सिंह ने 48 बॉल में 6 चौके और 7 छक्कों के साथ 91 रनों की पारी खेली. कप्तान अय्यर ने 25 बॉल में 4 चौके और 2 छक्के के साथ 45 रन बनाए. जोस इंग्लिस ने 30 और शशांक सिंह ने 33 रनों का योगदान दिया. लखनऊ के लिए दिग्वेश राठी और आकाश सिंह ने 2-2 विकेट चटकाए. लखनऊ की टीम लक्ष्य का पीछा करते हुए 15 ओवर में 145 रनों पर 5 विकेट गंवा चुकी है.

अर्शदीप सिंह ने पावरप्ले में मचाया धमाल, 3 खतरनाक बल्लेबाज को आउट कर तोड़ी लखनऊ की कमर

धर्मशाला(एजेंसी)। आईपीएल 2025 का 54वां पंजाब किंग्स और लखनऊ सुपर जायंट्स के बीच धर्मशाला के हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेला जा रहा है. इस मैच में पंजाब किंग्स के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने पावर प्ले में कमाल का स्पैल डालकर 237 रनों के लक्ष्य का पीछा कर रही लखनऊ की कमर तोड़ कर रख दी. इस मैच में तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने लखनऊ की पारी तीसरे और अपने दूसरे में धमाल मचाया. उन्होंने ओवर की दूसरी गेंद पर शानदार फॉर्म में चल रहे मिशेल मार्श को शून्य के स्कोर पर नेहाल वढेरा के हाथों कैच आउट कराया. इस ओवर की पांचवीं गेंद पर उन्होंने लखनऊ के दूसरे सलामी बल्लेबाज एडेन मार्कराम को 13 रनों के निजी स्कोर पर बोल्ड कर उनकी गिल्लियां बिखेर दीं. अर्शदीप सिंह यहीं नहीं रूके और उन्होंने अपने तीसरे और एलएसजी की पारी के पांचवें ओवर की दूसरी गेंद पर इनफॉर्म बल्लेबाज और लखनऊ के बल्लेबाजी क्रम की रीढ़ की हड्डी माने जाने वाले निकोलस पूरन को भी पवेलियन की रहा दिखा दी. अर्शदीप ने पूरन को 6 रनों के निजी स्कोर पर एलबीड्ब्ल्यू आउट किया. अर्शदी सिंह अब तक 3 ओवर में 10 रन देकर 3 विकेट चटका चुके हैं. इस मैच में पंजाब किंग्स ने पहले खेलते हुए 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 236 रन बनाए. पंजाब के लिए प्रभसिमरन सिंह ने 48 बॉल में 6 चौके और 7 छक्कों के साथ 91 रनों की पारी खेली. कप्तान अय्यर ने 25 बॉल में 4 चौके और 2 छक्के के साथ 45 रन बनाए. जोस इंग्लिस ने 30 और शशांक सिंह ने 33 रनों का योगदान दिया.

रेपो रेट में 1.25-1.50 प्रतिशत तक की हो सकती है कटौती: एसबीआई रिपोर्ट

नई दिल्ली(एजेंसी)। लगातार कम होती महंगाई के कारण भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ब्याज दरों को आक्रामक रूप से कम कर सकता है। साथ ही मौद्रिक नीति के रुख को मार्च 2026 तक 'न्यूट्रल' से हटाकर और नरम किया जा सकता है। सोमवार को जारी हुई एसबीआई रिसर्च की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। रिपोर्ट में बताया गया कि बेस्ट केस सिनेरियो में अगर महंगाई दर 3 प्रतिशत के नीचे लगातार तीन महीने तक रहती है तो रेपो रेट में संचयी तौर पर 1.25 प्रतिशत से लेकर 1.50 प्रतिशत की कटौती वित्त वर्ष 26 तक देखने को मिल सकती है। एसबीआई की रिपोर्ट में बताया गया, मार्च में महंगाई कई वर्षों के न्यूनतम स्तर पर थी और आगे भी महंगाई के कम रहने की उम्मीद है। हम जून और अगस्त (पहली छमाही) में रेपो रेट में 0.75 प्रतिशत और दूसरी छमाही में 0.50 प्रतिशत की कमी की उम्मीद कर रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया, मार्च 2026 तक रेपो रेट 5 से 5.25 प्रतिशत तक आ सकता है। रिपोर्ट में बताया गया कि 0.25 प्रतिशत की छोटी कटौती की अपेक्षा 0.50 प्रतिशत की बड़ी कटौती अधिक प्रभावशाली होगी। केंद्रीय बैंक ने फरवरी 2025 में रेपो रेट में कटौती करना शुरू किया था, तब से आरबीआई ब्याज दरों को 0.50 प्रतिशत घटा चुका है।

देश में अप्रैल में आर्थिक गतिविधियों ने पकड़ी रफ्तार, पेट्रोल और डीजल की खपत बढ़ी

नई दिल्ली(एजेंसी)। देश में पेट्रोलियम उत्पाद जैसे डीजल, पेट्रोल और एलपीजी की खपत में अप्रैल में बढ़त देखी गई है, जो देश में आर्थिक गतिविधियों में बढ़त को दिखाता है। पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी) द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल में भारत की डीजल खपत बढ़कर 8.24 मिलियन टन हो गई, जो अब तक दर्ज की गई दूसरी सबसे अधिक मासिक खपत है। इसकी वजह महीने के दौरान कृषि और परिवहन क्षेत्रों की डीजल की मांग बढ़ना है। बीते महीने अप्रैल 2024 में हाई बेस पर 4 प्रतिशत की सालाना वृद्धि हुई है। पिछले वर्ष अप्रैल में लोकसभा चुनावों के लिए चुनावी प्रचार के कारण डीजल की खपत में दोहरे अंकों की वृद्धि हुई थी। ईंधन की कुल बिक्री में डीजल की हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत है, और इसकी खपत में वृद्धि अर्थव्यवस्था के कृषि और लॉजिस्टिक्स दोनों क्षेत्रों में उच्च आर्थिक गतिविधि को दर्शाती है। अप्रैल में पेट्रोल की खपत सालाना आधार पर 4.6 प्रतिशत बढ़कर 3.44 मिलियन टन हो गई है। पिछले साल अप्रैल में लोकसभा चुनावों में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा किए गए जोरदार प्रचार अभियान के कारण पेट्रोल की खपत में 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। यह वृद्धि एक हाई बेस पर हुई है जो अर्थव्यवस्था में वाहनों की बढ़ती बिक्रीको दिखाती है। बीते महीने के दौरान एलपीजी की खपत में भी 6.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और मांग बढ़कर 2.62 मिलियन टन पर रही। एलपीजी की खपत में वृद्धि की वजह केंद्र सरकार की उज्ज्वला योजना भी है, जिसके कारण एलपीजी ईंधन तक गरीब परिवारों को भी पहुंच मिल सकी है। इसके अलावा, होटलों और रेस्तरां में ईंधन की व्यावसायिक खपत भी बढ़ी है। आंकड़ों के मुताबिक, अप्रैल माह में वाणिज्यिक एयरलाइनों द्वारा एविएशन टरबाइन फ्यूल (एटीएफ) की खपत 7,66,000 टन दर्ज की गई, जो पिछले वर्ष के इसी माह की तुलना में 3.25 प्रतिशत अधिक है।

शब्द सामर्थ्य - 039

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीब (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे छींकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छींक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, बक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।

ऊपर से नीचे
1. विचित्र, अद्भुत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8. ब्रह्मपुत्र एक प्रसिद्ध देवर्षि 10. कार्यावली, करस्तानी, प्रशंसनीय कार्य 13. दासी, नौकरानी, बांदी, गुलाम स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला, आविष्कारक 16. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर 17. सामान (उ.) 21. संसार, दुनिया 22. समय, चमेली की जाति का एक पौधा और फूल 23. पराजित, परास्त।

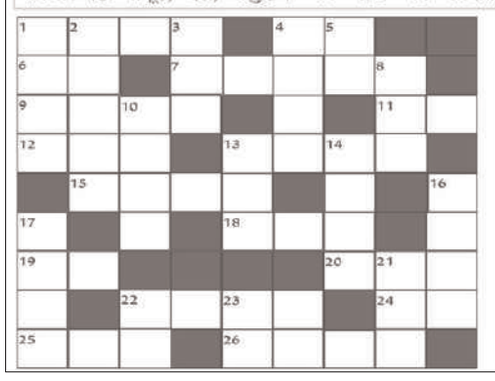

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 038 का हल

दि	क्क	त	■	आ	सा	न	■	आ
ल	■	मी	■	खि	■	सी	ख	ना
■	म	ज	बू	र	■	ह	■	जा
स	र्द	■	■	का	■	त	रा	ना
र	■	■	■	र	वि	■	ह	■
प	ह	ना	ना	■	ना	रा	ज	■
ट	■	■	क	शि	श	■	नी	ला
■	र	■	■	का	■	रा	■	य
खा	ति	र	दा	री	■	त	क्ष	क

कार्यालय अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग, कांकेर मण्डल, कांकेर
Email-scpwdkanker.2010@rediffmail.com/sc.kanker@nic.in, Fax No. 07868-224040

ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अन्तर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित भवन कार्य हेतु दिनांक 16.05.2025 समय 17.30 बजे तक ऑनलाईन (Online) निविदाएं आमंत्रित की जाती है:-

क्र.	एन.आई.टी. नंबर	टेण्डर नंबर	कार्य का नाम	अनुमानित लागत
1	2	3	4	5
01	04	167760	जिला कोण्डागांव में न्यायिक अधिकारी के लिए 01 नग एफ टाईप आवास गृह का निर्माण कार्य.	36.12 लाख

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई- प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in अथवा विभागीय वेबसाईट https://eproc.cgstate.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है.

डाउनलोड करने की अंतिम तिथि-16.05.2025 है.

नोटः- तृतीय आमंत्रण

अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग, कांकेर
मण्डल कांकेर

G-252600654/1

अस्थमा के 10 में से 7 गंभीर मामलों में का पता अभी भी नहीं चलता है : विशेषज्ञों ने भारत से राष्ट्रीय प्रतिक्रिया बढ़ाने का आग्रह किया

रायपुर। ग्लोबल इनिशियेटिव फॉर अस्थमा (जीआईएनए) यानी अस्थमा के लिए वैश्विक पहल की थीम साँस के जरिये उपचार को सब के लिए सुलभ बनाना के साथ चिह्नित, इस साल का विश्व अस्थमा दिवस भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य यात्रा में एक महत्वपूर्ण मौके पर आता है। अस्थमा और सांस की अन्य पुरानी बीमारियाँ गैर-संचारी रोग (एनसीडी) से संबंधित मौतों में तीन शिखर की योगदानकर्ताओं में से हैं। इनहेलेशन थेरेपी के महत्व और उपलब्ध उपचार की आवश्यकता पर जोर देते हुए, डॉ. तुषार पी. जैन, छाती, एलर्जी एवं टीबी विशेषज्ञ, रायपुर ने कहाः -अस्थमा प्रबंधन का प्राथमिक लक्ष्य लक्षणों को नियंत्रित करना, बचाव वाली दवा पर निर्भरता कम करना, अस्पताल में भर्ती होने से रोकना और फेफड़ों की कार्यक्षमता को बनाए रखना - अंततः जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। इन परिणामों को प्राप्त करने के लिए समय पर निदान, सही इनहेलर का उपयोग और लगातार अनुपालन की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्य से, इन क्षेत्रों में अक्सर खराब डिवाइस तकनीक, देखभाल तक सीमित पहुंच और दीर्घकालिक समर्थन की कमी के कारण बाधा उत्पन्न होती है।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, बुधवार 07 मई 2025

मॉक ड्रिल नियमित रूप से होनी चाहिए : गृहमंत्री विजय शर्मा

रायपुर (विसं)। भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के मद्देनजर केंद्र सरकार ने एहतियातन एक बड़ा फैसला लिया है। गृह मंत्रालय ने 7 मई को देशभर में मॉक ड्रिल आयोजित करने का निर्देश जारी किया है। यह फैसला सुरक्षा व्यवस्था की तत्परता जांचने के उद्देश्य से लिया गया है। छत्तीसगढ़ सहित सभी राज्यों में यह मॉक ड्रिल आयोजित की जाएगी। राज्य के गृह मंत्री विजय शर्मा ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि मौजूदा परिस्थितियों में समय से पहले तैयारी बेहद जरूरी है। समय और परिस्थिति का कोई भरोसा नहीं होता इसलिए मॉक ड्रिल नियमित रूप से होनी चाहिए।

दपूम रेलवे महिला कल्याण संगठन रायपुर द्वारा 45 कर्मचारियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन, रायपुर द्वारा अंतराष्ट्रीय श्रम दिवस के अवसर पर 06 मई 2025 (मंगलवार) रायपुर मंडल के सभी विभागो से दक्ष, समर्पित एवं कर्मठ 45 कर्मचारियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया. अध्यक्षा सेक्रो श्रीमती शिखा सिंह ने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे अपने कार्यक्षेत्र में भविष्य में भी अपनी दक्षता एवं कर्मठता बनाये रखेंगे, जिससे कि उनके साथ साथ रेल मंडल की उत्रोत्तर प्रगति होती रहेगी.

यह आयोजन अध्यक्षा सेक्रो श्रीमती शिखा सिंह की अध्यक्षता में किया गया जिसमे उपाध्यक्षा सेक्रो श्रीमती अदिति अग्रवाल, सचिव सेक्रो श्रीमती राशि गुप्ता, सह सचिव श्रीमती अमृता शाह सहित अन्य सेक्रो सदस्याएँ उपस्थित रही।

दपूम रेलवे के रायपुर मंडल को मिला 'ईट राइट कैंपस' का प्रतिष्ठित खिताब

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर मंडल को भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) द्वारा 'ईट राइट कैंपस' (Eat Right Campus) का खिताब प्रदान किया गया है। यह उपलब्धि स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा के उच्चतम मानकों को अपनाने का प्रमाण है।

इस सम्मान के अंतर्गत रायपुर मंडल के रनिंग रूम रायपुर, रनिंग रूम भिलाई, रनिंग रूम दुर्ग तथा मंडल रेल प्रबंधक स्टाफ कैंटीन शामिल हैं। इससे पूर्व, बिलासपुर जोन के बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग एवं गोंदिया रेलवे स्टेशनों को पहले ही 'ईट राइट स्टेशन' का प्रमाणन प्राप्त हो चुका है।

यह उल्लेखनीय उपलब्धि दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर जोन के चिकित्सा विभाग तथा भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के बीच हुए समन्वय एवं सतत प्रयासों का परिणाम है। यह प्रमाणन न केवल कर्मचारियों के स्वास्थ्य एवं कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि रेलवे की भोजन व्यवस्था में पारदर्शिता और गुणवत्ता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

प्रमुख विशेषताएं- खाद्य लाइसेंस अनुपालन- सभी इकाइयों ने आवश्यक खाद्य लाइसेंस प्राप्त कर लिए हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि खाद्य विक्रेता FSSAI के निर्धारित मानकों का पालन करते हैं। स्वास्थ्य परीक्षण- सभी खाद्य सेवा कर्मियों का व्यापक चिकित्सीय परीक्षण कर उनकी स्वास्थ्य स्थिति का सत्यापन किया गया। प्रशिक्षण- सभी संबंधित कर्मचारियों को FoSTaC (Food Safety Training and Certification) के अंतर्गत खाद्य सुरक्षा एवं स्वच्छता का व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। ऑडिट प्रक्रिया- मान्यता प्राप्त ऑडिट संस्थाओं के माध्यम से सभी इकाइयों का गहन मूल्यांकन कर ईट राइट कैंपस का प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक महोदय का कुशल मार्गदर्शन और सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे भविष्य में भी अपने कर्मचारियों एवं यात्रियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता रहेगा।

महापौर मीनल चौबे ने जलविभाग अध्यक्ष संतोष सीमा साहू जोन अध्यक्ष अम्बर अग्रवाल सहित पार्षदों की जलसमस्या को लेकर की बैठक

जोन-5 में टुल्लू पम्प से पानी खींच रहे लोगों के टुल्लू पम्प जप्त करने के निर्देश

पार्षदों का सुझाव विद्युत प्रवाह जल आपूर्ति के दौरान बंद करना हो तो सभी समस्याग्रस्त जगह पर एक साथ रखे अन्यथा कही भी ना रखे, व्यवस्था सुधार के लिए कार्य करें

रायपुर (विश्व परिवार)। आज महापौर श्रीमती मीनल चौबे ने जलकार्य विभाग के अध्यक्ष श्री संतोष सीमा साहू एवं जोन 5 जोन अध्यक्ष श्री अम्बर अग्रवाल, एमआईसी सदस्य श्रीमती सरिता आकाश दुबे, श्रीमती सुमन अशोक पाण्डेय सहित पार्षद श्रीमती दुर्गा यादराम साहू, श्रीमती गमता सोनू तिवारी सभी जोन 5 वार्ड पार्षदों जोन अधिकारियों की उपस्थिति में जोन क्षेत्र के वार्डों में गर्मी में पेयजल संकट को लेकर चर्चा एवं उसके निदान के संबंध में विचार विमर्श कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये है। वार्ड पार्षद गणों ने सुझाव दिया कि गर्मी में पेयजल संकट हेतु पानी आपूर्ति के समय विद्युत प्रवाह बंद रखना हो तो सभी समस्याग्रस्त जगहो पर एक साथ ऐसा किया जाये। अन्यथा कही पर ऐसा ना हो पार्षद गणों ने सुझाव देते हुए कहा कि पेयजल व्यवस्था राजधानी शहर में सुधारने हर संभव प्रयास लक्ष्य तय कर किया जाये। ताकि विद्युत प्रवाह बंद रखने की स्थिति ना आये एवं पेयजल समस्या का समाधान हो सके।

महापौर ने ठाकुर प्यारेलाल सिंह वार्ड एवं पंडित सुन्दरलाल शर्मा वार्ड की वार्ड पार्षद एवं एमआईसी सदस्य द्वारा विभिन्न स्थानों सहित मैत्री नगर, चंद्रशेखर नगर, पहाड़ी तालाब, प्रगति चौक, मिलेनियम चौक एवं अमरपुरी में जलप्रदाय के समय पानी के प्रेशर में कमी आने के संबंध में चर्चा कर जानकारी दिये जाने पर वार्ड के विभिन्न स्थानों में जलप्रदाय के समय टूल्लू पंप का उपयोग रोकने एवं टूल्लू पंप का उपयोग करने पर टूल्लू पंप जब्ती के संबंध में कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

बैठक में महापौर को महंत लक्ष्मीनारायण दास वार्ड क्र. 42 के पार्षद द्वारा मोतीबाग जलागार से वार्ड अंतर्गत ढीमर पारा क्षेत्र में पर्याप्त पानी नहीं मिलने के संबंध में जानकारी दी गई। तत्संबंध में रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के अधिकारी द्वारा मोतीबाग जलागार से प्रात: जलप्रदाय पुरानी पाईप लाईन से एवं शाम का जलप्रदाय नई पाईप लाईन से किये जाने की जानकारी दी गयी। इस पर महापौर द्वारा रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, जोन क्र. 05 एवं जोन क्र. 04 की जल विभाग की टीम को आपसी सामंजस्य बनाकर संबंधित क्षेत्र में जलप्रदाय करने का निर्देश दिया गया।

वामन राव लाखे वार्ड क्र. 66 के पार्षद द्वारा आदर्श नगर, रामायण नगर, वाल्मिकी नगर एवं चंद्रशेखर नगर में जलप्रदाय के समय पर्याप्त पानी नहीं मिलने के संबंध में जानकारी दी गई। तत्संबंध में जोन अधिकारियों द्वारा दिनांक 05 मई 2025 को वार्ड अंतर्गत संतोषी चौक में किये गये इंटरकनेक्शन से उक्त क्षेत्र में जलप्रदाय में वृद्धि होने की जानकारी दी गयी।

भक्त माता कर्मा वार्ड क्र. 67 की पार्षद द्वारा वार्ड अंतर्गत 07 स्थानों में जलप्रदाय के समय पर्याप्त पानी नही मिलने के संबंध में जानकारी दी गई। वार्ड पार्षद द्वारा जल समस्या से प्रभावित क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में पानी टैंकर से जलप्रदाय करने की जानकारी दी गई।

टाइम्स ऑफ इंडिया के विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को दी पत्रकारिता में करियर की बारीकियां

रायपुर (विश्व परिवार)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग में आयोजित एक विशेष सत्र में टाइम्स ऑफ इंडिया के सेल्स एंड मार्केटिंग विभाग से विनय कुमार और वरिष्ठ संवाददाता पार्थ सारथी बेहरा ने विद्यार्थियों को पत्रकारिता के क्षेत्र में भविष्य की संभावनाओं और तैयारियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। इस सत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को तेजी से बदलते मीडिया परिदृश्य में अपडेट रहने और करियर के लिए तैयार करने के लिए प्रेरित करना था।

विनय कुमार ने मीडिया उद्योग में सेल्स और मार्केटिंग की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए पाठक संख्या बढ़ाने की रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि पाठकों की रुचि को समझना और उनके अनुरूप कंटेंट तैयार करना आज के समय में कितना महत्वपूर्ण है। साथ ही, उन्होंने डिजिटल मार्केटिंग और सोशल मीडिया के उपयोग से ब्रांड वैल्यू बढ़ाने के गुर भी साझा किए। वरिष्ठ संवाददाता पार्थ सारथी बेहरा ने पत्रकारिता के क्षेत्र में नैतिकता, विश्वसनीयता और तथ्य-जांच के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे हमेशा नई तकनीकों और रुझानों के साथ अपडेट रहें, ताकि वे प्रतिस्पर्धी माहौल में अपनी पहचान बना सकें। उन्होंने डिजिटल पत्रकारिता, मल्टीमीडिया स्टोरीटेलिंग और डेटा जर्नलिज्म जैसे उभरते क्षेत्रों में कौशल विकास की आवश्यकता पर बल दिया।

यह सत्र विद्यार्थियों के बीच उत्साह और जिज्ञासा का केंद्र रहा। सत्र के अंत में प्रश्नोत्तर दौर में विद्यार्थियों ने विशेषज्ञों से पत्रकारिता और मीडिया उद्योग से संबंधित अपने सवालों के जवाब प्राप्त किए।

ग्रामीण विधायक मोतीलाल साहू ने दी एकमुश्त लगभग 70 लाख के नए विकास कार्यों के भूमिपूजन की सौगात

रायपुर (विश्व परिवार)। आज रायपुर ग्रामीण विधायक मोतीलाल साहू ने रायपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत नगर पालिक निगम रायपुर के जोन क्रमांक 8 के तहत पण्डित जवाहर लाल नेहरू वार्ड क्रमांक 2 के कबीर नगर सोनडोंगरी क्षेत्र के विभिन्न 6 स्थानों पर लगभग 70 लाख रूपये की स्वीकृत लागत से नवीन विकास कार्यों को शीघ्र करवाने एमआईसी सदस्य गायत्री सुनील चंद्राकर, जोन 8 जोन अध्यक्ष प्रीतम सिंह ठाकुर, वार्ड 2 के पार्षद भगतराम हरवंश सहित गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, महिलाओं, नवयुवकों, आमजनों की बड़ी संख्या में उपस्थिति के मध्य श्रीफल फोड़कर और कुदाल चलाकर भूमिपूजन करते हुए नागरिकों को शानदार सौगात दी है. रायपुर ग्रामीण विधायक मोतीलाल साहू ने नगर निगम जोन 8 के वार्ड नम्बर 2 में रायपुर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत कबीर नगर थाना के पास कामगार शेड निर्माण, सोनडोंगरी में शीतला सेवा मण्डल समिति के पास सामुदायिक भवन निर्माण, एमडी 355 से दिल्ली वर्ड पब्लिक स्कूल तक सीसी रोड निर्माण, सोनडोंगरी शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला में प्रार्थना शेड और बाउंड्रीवाल निर्माण, सोनडोंगरी में नवनिर्मित प्रधानमंत्री आवास योजना के आवासों में पेयजल व्यवस्था हेतु पाईप लाईन विस्तार कार्य और कबीर नगर के उड़ान उद्यान में मरम्मत कार्य शीघ्र किये जाने भूमिपूजन करते हुए नए विकास कार्यों को प्रारम्भ किया और जोन 8 जोन कमिश्नर राजेश्वरी पटेल और कार्यपालन अभियंता अभिषेक गुप्ता को तत्काल नए विकास कार्य प्रारम्भ करवाकर उन्हें सतत मॉनिटरिंग करते हुए तय समयसीमा के भीतर उच्च स्तरीय गुणवत्ता सहित पूर्ण करवाना जनहित में जनसुविधा विस्तार की दृष्टि से पूर्ण करवाना सुनिश्चित करवाने निर्देशित किया।

चंदा देवी तिवारी हास्पिटल में सम्पन्न हुआ नि:शुल्क रोग निदान शिविर, सैकड़ों मरीज हुए लाभान्वित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिला बलौदाबाजार भाटापारा के सबसे प्रसिद्ध जिला मुख्यालय मे स्थित 180 बिस्तर मल्टीस्पेशलिटी चंदा देवी तिवारी हास्पिटल मे संस्था के संस्थापक समाजसेवी लोहियावादी लोकप्रिय जननेता अधिवक्ता एवं पूर्व विधायक स्व. पं.बंशराज तिवारी जी की 100वीं जन्मजयंती पर आयोजित नि:शुल्क रोग परिक्षण एवं निदान शिविर मे कुल 294 मरीजों का परिक्षण किया गया जिसमे 30 सोनोग्राफी 74 खून पेशाब की जांच 45 ईसीजी 22 एक्सरे 37 एंडोस्कोपी कुल 31 मरीजों की सर्जरी की गई जिसमे हार्निया हाईड्रोसील बवासीर सम्मिलित है। इसके अलावा नेत्र रोग दंत रोग शिशु रोग अस्थि रोग रक्तचाप मधुमेह का भी परिक्षण एवं उपचार विशेषज्ञ चिकित्सकों के द्वारा किया गया।

शिविर का शुभारंभ पं. बंशराज जी के पुत्रों अशोक कुमार तिवारी डा प्रमोद तिवारी विनोद तिवारी पौत्र अभिषेक तिवारी डा नितिन तिवारी डा सुकृति तिवारी पुत्रवधू सोनल तिवारी डा गीतिकाशंकर तिवारी की उपस्थिति मे वरिष्ठ जन डी पी जैन एस एम पाद्धेय द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया इस अवसर पर प्रमोद शुक्ला पीयूष मिश्रा लक्ष्मेन्द्र अग्रवाल करीबी जनों के साथ पत्रकारगण उपस्थित रहे।

शिविर में डा नरेंद्र कर्स डा रीतिक रायजादा डा राहुल देव डा रोशन देवांगन संजय पांडेय दीपक बांधे बसंत वर्मा एवं सभी अस्पताल के कर्मचारियों ने अपना सहयोग प्रदान किया।संस्था के संचालकों द्वारा लगातार 19 वर्षों से आयोजित हो रहे इस पुण्य एवं भव्य आयोजन का हिस्सा बने सभी मरीजों उनके परीजनों एवं सहयोग कर्ताओं का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा आगंतुकों को शीतल पेय वितरित किया गया।

संचालकद्वय डा.नितिन तिवारी एवं डा.गीतिका शंकर तिवारी ने बताया कि हास्पिटल मे मल्टीस्पेशलिटी तथा सुपर स्पेशलिटी विभाग जैसे ट्रामा स्त्री एवँ प्रसूति न्यूरो सर्जरी जनरल मेडिसिन जनरल लैप्रोस्कोपिक सर्जरी जनरल आई सीयू शिशु यूरो सर्जरी कैंसर संबंधी रोग के अलावा अब कैथ लेब जिसके अंतर्गत एंजियोप्लास्टी तथा एंजियोग्राफी की सुविधा भी अंचलवासियों के लिए उपलब्ध रहेगी।

भावपूर्ण श्रद्धांजली

स्व. श्रीमती देवमुना देवी

जन्मतिथि: 05 जून 1957

स्वर्गवास: 26 अप्रैल 2025, शनिवार

नैनं छिन्दन्ति शस्त्रणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।

शोक-पत्र

श्रीमान/श्रीमति .....

अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा कि हमारी पूज्यनीया माताजी **श्रीमती देवमुना देवी (पति स्व. सी.एच. प्रसाद)** का **स्वर्गारोहण** दिनांक 26/04/2025, शनिवार को हो गया है जिनका **दशगात्र कार्यक्रम** दिनांक 08/05/2025, गुरूवार को **तेरहवीं (ब्रम्हभोज)** का कार्यक्रम दिनांक 11/05/2025, रविवार को दोप. 1 बजे हमारे निवास स्थान पर रखा गया है।

अतः उक्त कार्यक्रम में सम्मिलित होकर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

विनीत-
दिनेश कुमार प्रसाद (पुत्र)
राजेश कुमार प्रसाद (पुत्र)
मो. 9827188751, 8878674142

शोकाकुल-
प्रसाद एवं साव परिवार

निवास स्थानः एल.आई.जी. 366, दीनदयाल हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, त्रिदेव मंदिर के पास, दादर रोड, चरोदा

बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने की 31 मार्च, 2025 को समाप्त तिमाही और वित्त वर्ष के लिए वित्तीय परिणामों की घोषणा

रायपुर (विश्व परिवार)। सुदृढ़ और स्थायित्वपूर्ण वृद्धि- बैंक ने सुदृढ़ आस्ति गुणवत्ता बनाए रखते हुए वित्त वर्ष 2025 में निवल लाभ मं वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 10.1 प्रतिशत की वृद्धि अर्जित की।

मुख्य बिंदु- बैंक का वैश्विक कारोबार 31 मार्च 2025 तक 27 लाख करोड़ रुपये के मील स्तंभ को पार कर चुका है। वित्त वर्ष 2025 में स्टैंडअलोन निवल लाभ बढ़कर 19,581 करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया, इसमें वर्ष-दर-वर्ष आधार पर10.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। समेकित इकाई का निवल लाभ 20,000 करोड़ रुपये के मील स्तंभ को पार करते हुए वित्त वर्ष 25 के लिए 20,716 करोड़ रुपये रहा। गैर-ब्याज आय में 14.8 प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष आधार पर वृद्धि के फलस्वरूप बैंक की लाभप्रदता में वृद्धि हुई है, जो कि वित्त वर्ष'25 के लिए 16,647 करोड़ रुपये रही। परिचालनगत लाभ में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 4.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और यह वित्त वर्ष 2025 में 32,435 करोड़ रुपये रहा। आस्तियों पर प्रतिलाभ (ROA) 1 प्रतिशत से ऊपर बना हुआ है और वित्त वर्ष 25 के लिए 1.16 प्रतिशत पर रहा। वित्त वर्ष 25 के लिए इक्विटी पर प्रतिलाभ (ROE) 16.96 प्रतिशत रहा है। वित्त वर्ष 25 के लिए वैश्विक निवल ब्याज मार्जिन (NIM) 3.02 प्रतिशत, जबकि घरेलू एनआईएम 3.18 प्रतिशत रहा। बैंक ने सुदृढ़ आस्ति गुणवत्ता बनाए रखी है, बैंक का सकल एनपीए वित्त वर्ष 2024 के 2.92 प्रतिशत की तुलना में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 66 बीपीएस घटकर वित्त वर्ष 2025 में 2.26 प्रतिशत रहा। वहीं निवल एनपीए भी वित्त वर्ष 25 में 10 बीपीएस की कमी के साथ 0.58 प्रतिशत हो गया, जबकि वित्त वर्ष 2024 में यह 0.68 प्रतिशत था। यहपिछले 13 वर्षों में सबसे कम सकल और निवल एनपीए स्तर है। वित्त वर्ष 25 के लिए स्लिपेज अनुपात वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 21 बीपीएस घटकर 0.78 प्रतिशत हो गया। टीडब्लूओ के साथ 93.29 प्रतिशत और टीडब्लूओ के बिना 74.87 प्रतिशत के प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) के साथ बैंक ऑफ़ बड़ौदा की बैलेंस शीट सुदृढ़ बनी हुई है। वित्त वर्ष 25 के लिए ऋण लागत 1 प्रतिशत से नीचे 0.47 प्रतिशत पर बनी हुई है। रिटेललोन बुक में वृद्धि के परिणाम स्वरूप वित्त वर्ष 25 मेंबैंक ऑफ़ बड़ौदा के वैश्विक अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 12.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और घरेलू अग्रिमों में 13.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। ऑटो ऋण (20.3 प्रतिशत), मॉर्गेज ऋण (18.9 प्रतिशत), गृह ऋण (17.3 प्रतिशत), शिक्षा ऋण (15.9 प्रतिशत) जैसे क्षेत्रों में अच्छी वृद्धि के कारण बैंक के ऑर्गेनिक रिटेल अग्रिमों में 19.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। अग्रिमों में रिटेल, कृषि ऋण और एमएसएमई ऋण (आरएएम) की हिस्सेदारी वर्ष-दर-वर्ष आधार पर190 बीपीएस अंकों से बढ़कर 59.6 प्रतिशत हो गई। वित्त वर्ष'25 में रिटेल, कृषि ऋण और एमएसएमई ऋण (आरएएम) पोर्टफोलियो में 17.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। बैंक के बोर्ड ने आवश्यक अनुमोदन के अधीन 418 प्रतिशत का लाभांश घोषित करने कीअनुशंसा की है।

सुकमा में नक्सलियों की बौखलाहट देखने को मिली

सुकमा (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के सुकमा में नक्सलियों की बौखलाहट देखने को मिली है. नक्सलियों ने तारलागुड़ा के उपसरपंच मुचाकी मूचाकी रामा की गला घोंटकर हत्या कर दी. इस घटना से इलाके में दहशत का माहौल बन गया है. जानकारी के अनुसार, बिना वर्दी के पहुंचे माओवादियों ने उपसरपंच मूचाकी रामा को घर से उठाया और जंगल ले जाकर रस्सी से गला घोंटकर हत्या कर दी. यह घटना सोमवार दोपहर लगभग 3:00 बजे की है. घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची और शव को सुरक्षित निकाला. शव को वैधानिक कार्यवाही के लिए भेजा गया है और पुलिस मामले की जांच में जुट गई है. नक्सलियों द्वारा उप सरपंच की हत्या को लेकर उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने इस घटना को नक्सलियों की कायराना करतूत करार देते हुए इसकी कड़ी निंदा की.

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354